केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो :भारतीय बस्ती दैनिक वेब www.bhartiyabasti.com और उसका छपा संस्करण सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क-bhartiyabasti@gmail.com
मो0 9450567450| 9336715406

दैनिक
भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com के लिये विज्ञापन बुक कराये। विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम सम्पर्क
मो0 9336715406
8400925463
भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :49 अंक 121 सोमवार 23 नवम्बर 2026 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

एक नजर

ट्रक की टक्कर से साइकिल सवार की मौत



–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती।कप्तानगंज कस्बे के मुख्य चौराहे पर रविवार दोपहर तेज रफ्तार ट्रक की टक्कर से साइकिल सवार की मौके पर ही मौत हो गई। टक्कर इतनी जोरदार थी कि साइकिल सवार सड़क पर गिर पड़ा और उसकी मौके पर ही जान चली गई। हादसे के बाद घटनास्थल पर भीड़ जुट गई। मृतक की पहचान नहीं हो सकी है, पुलिस उसकी शिनाख्त कराने में जुटी है।

जानकारी के अनुसार, गोरखपुर से बस्ती की तरफ जा रहा तेज रफ्तार ट्रक कप्तानगंज मुख्य चौराहे से गुजर रहा था। इसी दौरान ट्रक ने साइकिल से जा रहे व्यक्ति को जोरदार टक्कर मार दी।

टक्कर लगते ही साइकिल सवार गंभीर रूप से सड़क पर गिर पड़ा और उसकी मौत हो गई। हादसे के बाद आसपास मौजूद लोगों में अफरा–तफरी मच गई। कुछ ही देर में मौके पर बड़ी संख्या में लोग एकत्र हो गए।

घटना की सूचना मिलने पर कप्तानगंज पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर मृतक की पहचान कराने की प्रक्रिया शुरू की। हालांकि खबर लिखे जाने तक उसकी पहचान नहीं हो सकी थी। पुलिस आसपास के लोगों से पूछताछ कर शिनाख्त कराने का प्रयास कर रही है।

रस्सी बाइक सवार युवक के गले में फंसने से मौत

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। बस्ती में रूधौली–बांसी मार्ग पर रविवार सुबह करीब 10रू30 बजे ट्रैक्टर–ट्रॉली में बांस–बल्ली लादने के दौरान फेंकी गई रस्सी बाइक सवार युवक के गले में फंस गई।

बाइक पर पीछे बैठे युवक की गर्दन में रस्सी फंसने से वह गंभीर रूप से घायल होकर सड़क पर गिर पड़ा। स्थानीय लोग उसे सीएचसी रुधौली ले गए, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। बाइक चला रहे साथी को भी हल्की चोटें आई हैं।

नितेश कुमार श्रीवास्तव पुत्र विजेंद्र कुमार, निवासी साकेत नगर, रौता चौराहा बस्ती, साथी शेखर श्रीवास्तव के साथ घर से बांसी जा रहे थे। नगर पंचायत रुधौली क्षेत्र में सड़क किनारे खड़ी ट्रैक्टर–ट्रॉली पर बांस–बल्ली लादने का काम चल रहा था। इसी दौरान वहां मौजूद युवकों की ओर से फेंकी गई रस्सी नितेश के गले में फंस गई। अचानक हुए हादसे से मौके पर चीख–पुकार मच गई।

करंट की चपेट में आने से अधेड़ झुलसा, मेडिकल कालेज रेफर

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। लालगंज थाना क्षेत्र के महश्था गांव में रविवार को सब्जी के खेत की सिंचाई के लिए टुल्लू पंप लगाते समय एक अधेड करंट की चपेट में आकर गंभीर रूप से झुलस गया। हादसे में उसके दाहिने हाथ की ऊंगली बुरी तरह झुलस गई।

मिली जानकारी के अनुसार, महश्था निवासी अकरम पुत्र मोहम्मद रजली रविवार को सुबह करीब 11 बजे अपने घर के बगल स्थित सब्जी के खेत की सिंचाई के लिए टुल्लू पंप लगा रहे थे। इसी दौरान अचानक वह विद्युत करंट की चपेट में आ गए। करंट लगने से उनके दाहिने हाथ की ऊंगली गंभीर रूप से झुलस गई।

घटना के बाद परिजन आनन–फानन में उन्हें निजी वाहन से प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बनकटी ले गए। वहां प्राथमिक उपचार के बाद उनकी गंभीर स्थिति को देखते हुए चिकित्सक ने एंबुलेंस से कैली स्थित मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया। जहां उनका उपचार चल रहा है।

आउटसोर्स कर्मचारियों को मिले बढ़ा हुआ मानदेयः लापरवाही बर्दाश्त नहीं–योगी

लखनऊ (आभा)। आउटसोर्स कर्मचारियों के भुगतान की समीक्षा करते हुए निर्देश दिया कि नई भुगतान व्यवस्था के तहत बढ़ा हुआ पारिश्रमिक सभी कर्मचारियों को समय पर और पूरा मिले। ट्रांसफॉर्मेशन कमीशन की बैठक के दौरान सीएम योगी ने कहा, आउटसोर्सिंग कर्मचारियों को नई व्यवस्था के तहत बढ़ा हुआ मानदेय दिया जाए। साथ ही सीएम ने उद्योगों को दी जाने वाली सुविधाओं, प्रोत्साहन और सब्सिडी का लाभ सीधे स्थानीय युवाओं और निवासियों तक पहुंचने की बात भी कही।



मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को अधिकारियों को राज्य में जारी और प्रस्तावित एक्सप्रेसवे, औद्योगिक तथा बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को निर्धारित समयसीमा में पूरा करने के निर्देश दिए। साथ ही आउटसोर्सिंग कर्मचारियों को नई व्यवस्था के तहत बढ़ा हुआ मानदेय देने के भी निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि उद्योगों को दी जाने वाली सुविधाओं, प्रोत्साहन और सब्सिडी का लाभ सीधे स्थानीय युवाओं और निवासियों तक पहुंचना चाहिए।

सीएम योगी ने 88 विभागों में कार्यरत तीन लाख 10 हजार 437 आउटसोर्स कर्मचारियों के भुगतान की समीक्षा करते हुए निर्देश दिया कि नई भुगतान व्यवस्था के तहत बढ़ा हुआ पारिश्रमिक सभी कर्मचारियों को समय पर और पूरा मिले। योगी ने स्पष्ट किया कि इस मामले में किसी भी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। बयान के अनुसार, चित्रकूट लिंक एक्सप्रेसवे की निविदा प्रक्रिया 30 नवंबर तक पूरी कर ली जाएगी।

बस्ती से पाकिस्तान रवाना हुआ जत्था



–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। भारत सहित देश विदेश के अनेक श्रद्धालु बाबा नानक के जन्म स्थान ननकाना साहब पाकिस्तान में जन्म स्थान दिवस पर साथ में पंजा साहिब,सच्चा सौदा साहिब,डेरा साहिब रोरी साहिब तथा श्री दरबार साहिब (करतार पुर साहिब) के लिये रवाना हो चुके हैं। इस जत्थे में बस्ती से सरदार कुलेवन्द्र सिंह, हरशरन कौर ,रश्मित सिंह एडवोकेट व सरदार दिपेंद्र सिंह एडवोकेट भी शामिल है।

सरदार कुलेवन्द्र सिंह ने बताया कि सकुशल वापस आने पर पाकिस्तान की हर जगह से मिट्टी लेकर अयोध्या व उत्तर प्रदेश के सभी गुरुद्वारा जी व मन्दिरों में टीकाकरण किया जायेगा। कहा कि वे श्री गुरुनानक देव जी से प्रार्थना करेंगे कि भारत–पाकिस्तान दोनों देशों में शान्ति व भाई चारा बना रहे। इसी यात्रा के दौरान रश्मीत सिंह ने अपना जन्मदिन मनाया।

योगी आदित्यनाथ की मां को जनसत्ता दल लोकतांत्रिक के नेता ने दिया श्रद्धांजलि



–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। जनसत्ता दल लोकतांत्रिक के प्रधान महासचिव आदित्य सिंह ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मां के निधन पर शोक व्यक्त किया। वह उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल जिले स्थित मुख्यमंत्री के पैतृक गांव पंचुर पहुंचे। यहां उन्होंने परिजनों से मुलाकात कर अपनी संवेदना जताई।

इस दौरान आदित्य सिंह ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मां के चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। उन्होंने दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की और शोकाकुल परिवार को इस दुख की घड़ी में धैर्य बनाए रखने की कामना की।

इस मौके पर पार्टी के कार्यकर्ता और स्थानीय लोग भी मौजूद रहे। सभी ने दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करते हुए परिवार के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की।

नशा मुक्ति पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम में दिया संदेश



–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। कृषि विज्ञान केन्द्र बंजरिया के सभागार में सिंह सेवा प्रशिक्षण संस्थान यूपी के द्वारा सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से नशा मुक्ति पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

गोष्ठी को डा. वी.वी. सिंह, डा. राघवेन्द्र सिंह, डा. प्रेमशंकर ने सम्बोधित करते हुये कहा कि नशा एक ऐसी समस्या है, जिसकी जड़ें ज्यादातर घरों तक पहुंच चुकी हैं। यह बुराई विकराल रूप धारण कर रही है। कहा कि समाज से इसे उखाड़ फेंकने के लिए हम सभी को अपना योगदान देना होगा, सबसे अधिक युवा इसकी गिरफ्त में आ रहे हैं। जागरूकता से ही नशे से मुक्ति मिल सकेगी।

वक्ताओं ने कहा कि खुलेआम नशे का व्यापार हो रहा है। धार्मिक स्थल व स्कूल के पास दुकान खुल रही हैं, मीटिंग व आयोजन में शराब का चलन बन्द होना चाहिए। यदि प्रत्येक व्यक्ति एक व्यक्ति को नशे की गिरफ्त से छुड़ाए तो बहुत बड़ी समस्या हल होगी। गोष्ठी के अंत में उपस्थित लोगों को नशा मुक्त भारत का संकल्प दिलाया गया।

सिंह सेवा प्रशिक्षण संस्थान यूपी के अध्यक्ष आर.के. सिंह ने जागरूता गोष्ठी में आयोजित अतिथियों, समाजसेवियों, बड़ी संख्या में उपस्थित महिलाओं का स्वागत करते हुये कहा कि महिलायें जागरूक हो जाय तो नशा मुक्ति तेजी से संभव है।

कार्यक्रम में राधा सिंह, इन्द्रावती देवी, कौशिल्या, पूनम पाण्डेय, आराधना, मेहरून्निशां के साथ ही बड़ी संख्या में लोग शामिल रहे।

संस्थापक मुलायम सिंह यादव की जयन्ती पर समाजवादियों ने किया रक्तदान



–सपा की मजबूत सरकार बने यही नेता जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि- महेन्द्रनाथ यादव

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । समाजवादी पार्टी के संस्थापक मुलायम सिंह यादव को उनके जयन्ती पर रविवार को याद किया गया। सपा जिलाध्यक्ष एवं बस्ती सदर विधायक महेन्द्रनाथ यादव के संयोजन में पार्टी कार्यालय पर मुलायम सिंह यादव के चित्र पर माल्यार्पण कर पार्टी नेताओं ने उन्हें भावुक होकर याद किया। नेता जी की स्मृति में 100 से अधिक समाजवादियों ने रक्तदान किया।

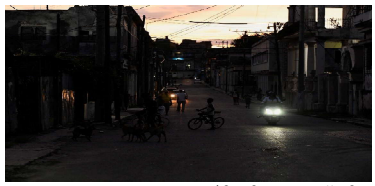
सपा जिलाध्यक्ष महेन्द्रनाथ यादव ने कहा कि नेताजी गरीबों, किसानों, नौजवानों की आवाज थे। उनके अधूरे सपनों को पूरा करने की जिम्मेदारी हम सभी समाजवादियों की है। राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के कुशल नेतृत्व में समाजवाद का कारवा निरन्तर प्रगति की ओर है। युवा पीढी को नेता जी मुलायम सिंह यादव के जीवन संघर्षों से प्रेरणा लेकर आगे बढना होगा। सदर विधायक महेन्द्रनाथ यादव ने कहा कि नेताजी हम सबके आदर्श है और उनके पद चिन्हों पर चलकर समाजवादी विचारधारा को मजबूती देना होगा। कहा कि पंचायतीराज व्यवस्था को मजबूती और आरक्षण देकर सबको जोड़ने का काम नेताजी ने किया था। कहा कि नेताजी को सच्ची श्रद्धांजलि यही है कि प्रदेश में सपा की मजबूत सरकार बने और सपा मुखिया अखिलेश यादव दूसरी बार मुख्यमंत्री बनें।

सपा कार्यालय पर आयोजित कार्यक्रम में पूर्व विधायक राजमणि पाण्डेय, विधायक राजेन्द्र चौधरी, कविन्द्र चौधरी अतुल, पूर्व मंत्री रामकरन आर्य, दयाशंकर मिश्र, राजकपूर यादव, समीर चौधरी, जावेद पिण्डारी, मो. सलीम, रन बहादुर यादव, अरविन्द यादव, राजेन्द्र चौधरी, मो. उमर, मो. स्वालेह, गीता भारती, मो. हारिस, अजय यादव, संजय गौतम, सुरेन्द्र सिंह 'छोटे', बुद्धि प्रकाश, जितेन्द्र यादव, यदुराम यादव, राजाराम यादव, हृदयराम यादव, राजेश यादव, राम सिंह यादव, इन्द्रावती शुक्ल, लक्ष्मण चौरसिया, हरेश्याम विश्वकर्मा, वृजेश मिश्र, संजय गौतम, अजीत सिंह, राहुल सिंह, जर्सी यादव, अभिषेक यादव, जोखूलाल यादव, रामभवन यादव, शकुन्तला चौरसिया आदि ने नेताजी के जीवन संघर्ष और योगदान पर प्रकाश डालते हुये कहा कि उन्होने पार्टी को मजबूत करने के लिये आखिरी सांस तक संघर्ष किया। उनके बताये मार्ग पर चलना हम सबकी जिम्मेदारी है। यही उनके प्रति सच्ची सद्भावना होगी। इस मौके पर 100 से अधिक समाजवादियों ने रक्तदान किया।

धरती पुत्र मुलायम सिंह यादव के जयन्ती पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य रूप से मो. यूनूस आलम, भोला पाण्डेय, अरविन्द सोनकर, प्रशान्त यादव, सुशील यादव, प्रवीण पाठक, देवेन्द्र श्रीवास्तव, मनोज शुक्ल, नितराम चौधरी, गुलाब सोनकर, राम स्वरूप पाल, मंशाराम कन्नौजिया, जीत बहादुर सिंह, विजय लक्ष्मी, प्रिया श्रीवास्तव, राधा देवी, संजू देवी, देवनाथ यादव, पंकज यादव, रणजीत यादव, मो. अहमद सज्जू, अशोक सिंह, रजनीश यादव, मो. सलीम, हेमन्त चौधरी, डब्बू यादव, रामशंकर निराला, वैजनाथ शर्मा, बदरूल हसन, अकबर अली, अशोक कुमार यादव, गिरीश चन्द्र, दाउद खान, मो. रईस, घनश्याम यादव, अशोक सिंह, सुजीत चौधरी, शकील अहमद, अब्दुल कलाम, कुलदीप मौर्य, जितेन्द्र यादव, अंकित यादव, वीरेन्द्र चौधरी, अंकुर वर्मा, राजवन्त यादव, रितीक कुमार, राजेश यादव के साथ ही जयन्ती पर बड़ी संख्या में सपा नेताओं, कार्यकर्ताओं ने मुलायम सिंह को नमन् किया।

75 जिलों में अचानक छाया अंधेरा, एक साथ काटी गई बिजली, बजा सायरन

लखनऊ (आभा) यूपी में आतंकी हमलों से बचने के लिए रविवार की शाम दो मिनट के लिए अंधेरा छा गया। एक साथ 75 जिलों की बिजली काट दी गई। अंधेरा होने के साथ ही सायरन बजना शुरू हो गई जो अक्सर हवाई हमलों को लेकर बजाया जाता है। दरअसल ये पूरी प्रक्रिया मॉकड्रिल के तहत की गई। आतंकी हवाई हमलों से बचने और लोगों की मदद को हमेशा तैयार रहने के लिए मॉकड्रिल की जाती है। इसमें सिखाया जाता है कि अगर भविष्य में अगर इस तरह की इमरजेंसी होती है तो खुद को और लोगों को कैसे बचाया जा सकता है। पूरे प्रदेश में एक साथ जो बिजली काटी गई वह भी मॉकड्रिल का हिस्सा था, जिसका उद्देश्य आतंकी गतिविधियों और भविष्य में किसी भी संभावित हवाई हमले जैसी आपात स्थितियों से निपटने के लिए सुरक्षा व्यवस्था को परखना था।

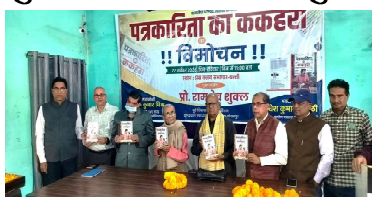


यूपी में नागरिक सुरक्षा व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ बनाने और युद्ध, हवाई हमले और अन्य आपातकालीन परिस्थितियों में प्रभावी ढंग से निपटने की तैयारियों को परखने के मकसद से सभी 75 जिलों में एक साथ सिविल डिफेंस एयर रेड और ब्लैकआउट मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया। भारत सरकार के गृह मंत्रलय के दिशा निर्देशों में आयोजित किए गए इस मॉक ड्रिल में एसडीएम, डीडीएम, एसडीआरएफ, पुलिस अगनिशमन, स्वास्थ्य विभाग सहित अन्य संबंधित विभागों की सक्रिय सहभागिता रही। अभ्यास के दौरान पहले पूरे प्रदेश में बिजली काटी गई। अंधेरा होने के साथ ही दो मिनट तक हवाई हमले की चेतावनी का सायरन बजाया गया। नागरिकों को सुरक्षित स्थानों पर शरण लेने का अभ्यास भी कराया जाएगा।

शब्दों के निर्माण और उनके बिगड़ने की समझ देती है पुस्तक– प्रो. रामदेव शुक्ल

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। पत्रकारिता केवल समाचार लिखने और प्रकाशित करने का माध्यम नहीं, बल्कि समाज को दिशा देने और जनसरोकारों को आवाज देने का सशक्त जरिया है। बदलते दौर में पत्रकारिता के मूल सिद्धांतों, दायित्वों और उसकी बारीकियों को समझना बेहद जरूरी है। इसी उद्देश्य को केंद्र में रखकर दैनिक जागरण/नई दुनिया इंदौर के समाचार संपादक एवं जनपद के निवासी कमलेश पाण्डेय द्वारा लिखित पुस्तक 'पत्रकारिता का ककहरा' का रविवार को प्रेस क्लब समागार में भव्य विमोचन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. रामदेव शुक्ल रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता राम नरेश सिंह मंजुल ने की। संयोजन ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष अवधेश कुमार त्रिपाठी ने किया, जबकि संचालन डॉ. योगेश कुमार शुक्ल ने किया।



विमोचन समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि प्रो. रामदेव शुक्ल ने कहा कि पुस्तक के शीर्षक में 'ककहरा' शब्द का प्रयोग लेखक की विनम्रता को दर्शाता है। वास्तव में यह पुस्तक केवल नए पत्रकारों के लिए ही नहीं, बल्कि हिंदी भाषा से जुड़ाव रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोगी है। उन्होंने कहा कि शब्दों का निर्माण कैसे होता है और उनका स्वरूप किस तरह बिगड़ता है, इसकी महत्वपूर्ण जानकारी इस पुस्तक में मिलती है। हर लेखक के मन में भविष्य का एक नक्शा होता है और उसकी लेखनी में उस कल्पना की झलक दिखाई देती है। लेखक का उद्देश्य केवल लिखना भर नहीं होना चाहिए, बल्कि अपने लेखन के माध्यम से समाज और विचारों को सकारात्मक दिशा देना भी होना चाहिए। उन्होंने पुस्तक की सराहना करते हुए लेखक कमलेश पाण्डेय के पहल को सराहा। कार्यक्रम को उत्तम सिंह, प्रेस क्लब उपाध्यक्ष विनोद उपाध्याय, समाजसेवी दुर्गा दत्त पांडेय, प्रदीप चन्द्र पाण्डेय, महेंद्र त्रिपाठी, रत्नेश शुक्ल, पुनीत ओझा, डॉ. सर्वेष्ठ मिश्र, कैलाश नाथ दुबे सहित अन्य लोगों ने संबोधित किया। पुस्तक के लेखक ने अपनी पत्रकारिता यात्रा और लेखन के अनुभव साझा किए। उन्होंने बताया कि पत्रकारिता के बुनियादी पहलुओं, भाषा की शुद्धता, समाचार लेखन की समझ और पत्रकार के दायित्वों को सरल भाषा में प्रस्तुत करने के उद्देश्य से इस पुस्तक की रचना की गई है, ताकि पत्रकारिता के विद्यार्थियों और नई पीढ़ी के पत्रकारों को इसका लाभ मिल सके। इस अवसर पर अनुराग श्रीवास्तव, बृहस्पति पांडेय, नीरज श्रीवास्तव, मनोज कुमार सिंह, रवीश मिश्र, विवेककान्त पाण्डेय, अनिल त्रिपाठी, अनिल पांडेय, राजेश यादव, हरि निषाद, सुनील पांडेय, वीरेंद्र पांडेय, हरिशंकर पांडेय, महेन्द्र त्रिपाठी, देवेन्द्र पाण्डेय, कपीस मिश्र, हेमंत पांडेय, कमलेंद्र पटेल सहित बड़ी संख्या में पत्रकार मौजूद रहे।

–पत्रकारिता की बारीकियों को समेटे 'पत्रकारिता का ककहरा' पुस्तक का विमोचन

चौधरी बृजेश पटेल ने थामा सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी का दामनः ओमप्रकाश राजभर ने दिलाई सदस्यता

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। सरदार सेना के प्रदेश उपाध्यक्ष एवं चर्चित नेता चौधरी बृजेश पटेल ने रविवार को लखनऊ में सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर ली। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं कैबिनेट मंत्री ओमप्रकाश राजभर ने उन्हें पार्टी की सदस्यता दिलाई। इस दौरान महादेवा विधानसभा क्षेत्र के विधायक दूधराम भी मौजूद रहे।



लखनऊ रवाना होने से पहले चौधरी बृजेश पटेल ने बस्ती के अमहट स्थित लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया। इसके बाद महादेवा विधायक दूधराम के साथ सैकड़ों गाड़ियों के काफिले में लखनऊ पहुंचे, जहां पार्टी कार्यालय पर विधिवत रूप से सदस्यता ग्रहण की। इस अवसर पर ओमप्रकाश राजभर ने चौधरी बृजेश पटेल का स्वागत करते हुए कहा कि वह एक संघर्षशील और जुर्जावान नेता हैं। उनके पार्टी में शामिल होने से संगठन को मजबूती मिलेगी। पार्टी शोषित एवं पीड़ित वर्ग के लोगों के हक और अधिकार की लड़ाई लगातार लड़ती रहेगी।

विधायक दूधराम ने कहा कि चौधरी बृजेश पटेल बस्ती जिले के ऊर्जावान नेता हैं, जो हमेशा लोगों को न्याय दिलाने और शोषितों की आवाज उठाने के लिए संघर्ष करते रहे हैं। उनके पार्टी में शामिल होने से जिले में संगठन को और मजबूती मिलेगी। सदस्यता ग्रहण करने के बाद चौधरी बृजेश पटेल ने कहा कि सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी की नीतियों और विचारधारा से प्रभावित होकर उन्होंने पार्टी की सदस्यता ग्रहण की है। उन्होंने कहा कि उनका उद्देश्य जनता की आवाज उठाना और जरूरतमंदों को न्याय दिलाना है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि बस्ती में अब हिंदू–मुस्लिम की नहीं, बल्कि भाईचारे की बात होगी। किसी भी जाति या धर्म का पीड़ित व्यक्ति उनके पास आएगा तो उसकी मदद और न्याय की लड़ाई के लिए वह सदैव तत्पर रहेंगे। बस्ती वापस पहुंचने पर चौधरी बृजेश पटेल का हरैया, कप्तानगंज, बड़ेवन सहित विभिन्न स्थानों पर समर्थकों एवं कार्यकर्ताओं ने जोरदार स्वागत और अभिनंदन किया। इस दौरान समर्थकों में खासा उत्साह देखने को मिला। इसी कड़ी में अभिषेक चौधरी उर्फ मोनू के नेतृत्व में अनेक स्थानों में चौधरी वृजेश पटेल का स्वागत किया गया।

इस दौरान विधायक दूधराम, विनय चौधरी, अमन राजभर, उमेश चौधरी, जिलाध्यक्ष मनोज राजभर, उमेश राजभर, आशीष राजभर, दीपक यादव, सुरेंद्र चौधरी, आकाश पटेल, मोहम्मद शमीम, पुष्कर चौधरी, दिनेश गौतम, छोटू यादव, अभिषेक चौधरी, प्रवीण यादव, मोहम्मद गोलू, शिवा गोरयाणी सहित बड़ी संख्या में समर्थक एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे।

"मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"—वेंडेल फिलिप्स

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 23 नवम्बर 2026 सोमवार

सम्पादकीय

लोकप्रियता की दौड़ में पत्रकारिता

लोकतंत्र में चुनाव केवल सरकार चुनने का माध्यम नहीं, बल्कि जनता को अपनी अपेक्षाएं और समस्याएं सामने रखने का अवसर भी है। चुनाव आते ही राजनीतिक दलों के घोषणा पत्र जारी होने लगते हैं। कहीं रोजगार देने का वादा होता है तो कहीं किसानों की आय बढ़ाने, शिक्षा और स्वास्थ्य सुधारने तथा सड़क, बिजली और पानी की सुविधाएं बेहतर करने की बात कही जाती है। मंचों से बड़े–बड़े दावे होते हैं और जनता को भरोसा दिलाया जाता है कि सत्ता में आने के बाद तस्वीर बदल जाएगी।

लेकिन असली सवाल चुनाव जीतने के बाद शुरू होता है। क्या जनता से किए गए वादों का हिसाब भी उसी गंभीरता से रखा जाता है, जिस गंभीरता से चुनाव के दौरान वोट मांगे जाते हैं? क्या किसी जनप्रतिनिधि से पांच साल बाद यह पूछा जाता है कि उसने अपने क्षेत्र के लिए क्या किया और कौन से वादे अब भी अधूरे हैं?

लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत जनता का मत है, लेकिन इसकी सबसे बड़ी कमजोरी तब सामने आती है जब मत देने के बाद जनता अपनी भूमिका को समाप्त मान लेती है। जबकि नागरिकों की जिम्मेदारी चुनाव के दिन मतदान करने तक सीमित नहीं होनी चाहिए। उन्हें अपने प्रतिनिधियों के कामकाज पर नजर रखनी चाहिए और स्थानीय समस्याओं को लगातार उठाना चाहिए।

आज भी देश के अनेक क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य, बेरोजगारी, सड़क और पेयजल जैसी समस्याएं लोगों के दैनिक जीवन को प्रभावित कर रही हैं। कई बार विकास की घोषणाएं तो खूब होती हैं, लेकिन उनका असर जमीन पर दिखाई देने में लंबा समय लग जाता है। योजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन राजनीतिक उपलब्धि बन जाते हैं, मगर उनके परिणामों की समीक्षा उतनी चर्चा में नहीं रहती।

राजनीतिक दलों को भी यह समझना होगा कि चुनावी सफलता ही जनसेवा का प्रमाण नहीं है। जनता का विश्वास बनाए रखने के लिए कामकाज में पारदर्शिता और जवाबदेही जरूरी है। वहीं विपक्ष की भूमिका भी केवल सरकार की आलोचना करने तक सीमित नहीं होनी चाहिए। उसे जनता के मुद्दों को मजबूती से उठाने के साथ बेहतर विकल्प भी प्रस्तुत करने चाहिए। मीडिया और सामाजिक संगठनों की जिम्मेदारी भी महत्वपूर्ण है। उन्हें चुनावी नारों और राजनीतिक आरोप–प्रत्यारोप से आगे बढ़कर यह देखना होगा कि जनता से किए गए वादों का कितना हिस्सा पूरा हुआ। विकास के दावों की चर्चा आंकड़ों और वास्तविक परिस्थितियों के आधार पर होनी चाहिए।

लोकतंत्र में जनता केवल मतदाता नहीं, बल्कि सत्ता की असली मालिक है। इसलिए जनप्रतिनिधियों को यह याद रखना चाहिए कि उनका कार्यकाल जनता की सेवा के लिए है, न कि केवल अगला चुनाव जीतने के लिए। चुनाव के समय किए गए वादों का हिसाब चुनाव से पहले ही मांगा जाना चाहिए। क्योंकि मजबूत लोकतंत्र वही है, जहां जनता सवाल पूछती है और सत्ता उन सवालों का जवाब देने के लिए जिम्मेदार होती है।

विकास कब बनेगा चुनावी मुद्दा?

उत्तर प्रदेश की राजनीति में पूर्वांचल का हमेशा से महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यहां की विधानसभा सीटें न केवल राजनीतिक दलों की जीत–हार तय करने में भूमिका निभाती हैं, बल्कि प्रदेश की सियासत को भी नई दिशा देती हैं। चुनाव आते ही पूर्वांचल की राजनीतिक सरगर्मी बढ़ जाती है। नेताओं के दौरे, जनसभाएं, घोषणाएं और राजनीतिक समीकरण चर्चा में आ जाते हैं। लेकिन इस पूरी कवायद के बीच एक सवाल अक्सर पीछे छूट जाता है कि पूर्वांचल के विकास की असली तस्वीर क्या है?

पूर्वांचल की पहचान अपनी सांस्कृतिक विरासत, मेहनतकश आबादी और कृषि आधारित अर्थव्यवस्था से है। इसके बावजूद रोजगार के सीमित अवसर, बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी, शिक्षा की गुणवत्ता और उद्योगों का अभाव आज भी बड़ी चुनौतियां बने हुए हैं। बड़ी संख्या में युवाओं को रोजगार की तलाश में दूसरे शहरों और प्रदेशों का रुख करना पड़ता है। यह केवल आर्थिक समस्या नहीं, बल्कि क्षेत्र के विकास से जुड़ा गंभीर विषय है।विधानसभा चुनाव में राजनीतिक दल अक्सर जातीय समीकरण, राजनीतिक गठबंधन और व्यक्तिगत लोकप्रियता को केंद्र में रखते हैं। इन मुद्दों का अपना राजनीतिक महत्व हो सकता है, लेकिन क्या किसी क्षेत्र का भविष्य केवल इन्हीं आधारों पर तय होना चाहिए? जनता को यह जानने का अधिकार है कि उसके क्षेत्र में कितने नए रोजगार के अवसर पैदा हुए, कितने अस्पताल बेहतर हुए, सरकारी विद्यालयों की स्थिति में कितना सुधार आया और किसानों की समस्याओं के समाधान के लिए क्या कदम उठाए गए।

बस्ती, गोरखपुर, संतकबीरनगर, सिद्धार्थनगर, अंबेडकरनगर, अयोध्या और आसपास के जिलों में विकास की संभावनाएं बहुत हैं। कृषि, खाद्य प्रसंस्करण, छोटे उद्योग, पर्यटन और शिक्षा के क्षेत्र में रोजगार के नए अवसर पैदा किए जा सकते हैं। जरूरत इस बात की है कि इन संभावनाओं को केवल चुनावी भाषणों तक सीमित न रखा जाए, बल्कि इनके लिए समयबद्ध योजनाएं तैयार हों। पूर्वांचल के युवाओं की सबसे बड़ी अपेक्षा रोजगार और बेहतर भविष्य है। उन्हें ऐसी व्यवस्था चाहिए जहां पढ़ाई पूरी करने के बाद नौकरी के लिए दूसरे राज्यों में भटकना मजबूरी न बने। छोटे शहरों में उद्योगों को प्रोत्साहन, कौशल प्रशिक्षण और स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर बढ़ाने की दिशा में गंभीर प्रयास होने चाहिए।

स्वास्थ्य सेवाएं भी चुनावी बहस का महत्वपूर्ण हिस्सा बननी चाहिए। जिला अस्पतालों और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में डॉक्टरों, दवाओं और जरूरी सुविधाओं की उपलब्धता पर चर्चा होनी चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को सामान्य इलाज के लिए भी बड़े शहरों का चक्कर न लगाना पड़े, यह किसी भी जनप्रतिनिधि की प्राथमिकता होनी चाहिए।

अब समय आ गया है कि पूर्वांचल की राजनीति में विकास को सबसे बड़ा मुद्दा बनाया जाए। राजनीतिक दलों को अपने उम्मीदवारों के साथ क्षेत्र के विकास का स्पष्ट रोडमैप जनता के सामने रखना चाहिए। वहीं मतदाताओं को भी केवल नारों और वादों से प्रभावित होने के बजाय पिछले कार्यकाल के कामकाज का हिसाब मांगना चाहिए।

लोकतंत्र में चुनाव केवल प्रतिनिधि चुनने का अवसर नहीं, बल्कि अपने क्षेत्र की दिशा तय करने का मौका भी होता है। पूर्वांचल को राजनीतिक चर्चाओं में हिस्सेदारी से आगे बढ़कर विकास की वास्तविक दौड़ में बराबरी का स्थान चाहिए। आने वाले विधानसभा चुनाव में यह तय होना चाहिए कि बहस केवल कौन जीतेगा, इस पर नहीं बल्कि पूर्वांचल कैसे आगे बढ़ेगा, इस पर भी हो। आखिरकार किसी क्षेत्र की असली राजनीतिक सफलता उसके नेताओं की लोकप्रियता से नहीं, बल्कि वहां के आम नागरिक के जीवन में आए बदलाव से मापी जानी चाहिए। आने वाले विधानसभा चुनाव में पूर्वांचल की जनता को यह तय करना होगा कि उसकी प्राथमिकता क्या है। उसे ऐसे जनप्रतिनिधियों की जरूरत है जो चुनाव के समय ही नहीं, बल्कि पूरे कार्यकाल में जनता के बीच मौजूद रहें।"

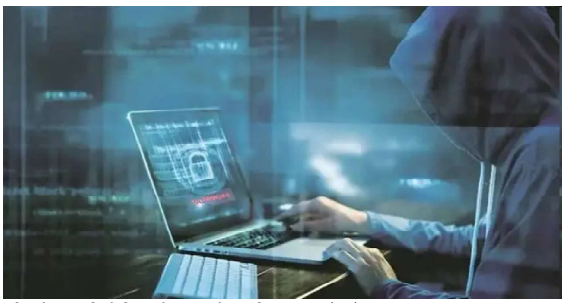
मृत्युदंड पर भारत का रुख और न्याय की चुनौती



—डॉ. प्रियंका 'सौरभ—

डिजिटल क्रांति ने भारत की अर्थव्यवस्था, बैंकिंग व्यवस्था और नागरिक जीवन को नई गति दी है। आज मोबाइल फोन के माध्यम से पैसे भेजना, बिलों का भुगतान करना, खरीदारी करना और सरकारी सेवाओं का लाभ उठाना पहले की तुलना में कहीं अधिक आसान हो गया है। यूपीआई, इंटरनेट बैंकिंग और डिजिटल वॉलेट ने वित्तीय लेन–देन को आम आदमी की पहुँच में ला दिया है। लेकिन इस सुविधा के साथ एक गंभीर चुनौती भी तेजी से उभरी हैकृसाइबर धोखाधड़ी। तकनीक ने जहाँ आर्थिक गतिविधियों को सरल बनाया है, वहीं अपराधियों को लोगों की मेहनत की कमाई तक पहुँचने के नए रास्ते भी उपलब्ध कराए हैं। आज साइबर अपराध केवल तकनीकी समस्या नहीं, बल्कि आर्थिक सुरक्षा, सामाजिक विश्वास और संस्थागत जवाबदेही से जुड़ा गंभीर प्रश्न बन चुका है। भारत में साइबर धोखाधड़ी के बढ़ते मामलों के पीछे कई परस्पर जुड़े कारण हैं। सबसे प्रमुख कारण डिजिटल सेवाओं का तेजी से विस्तार और उसके अनुपात में डिजिटल साक्षरता का विकास न हो पाना है। देश के छोटे कस्बों, गाँवों और दूरदराज के क्षेत्रों तक ऑनलाइन बैंकिंग और यूपीआई की पहुँच तो बढ़ी है, लेकिन बड़ी संख्या में उपयोगकर्ता डिजिटल सुरक्षा के बुनियादी नियमों से परिचित नहीं हैं। वे अनजान लिंक पर क्लिक कर देते हैं, ओटीपी साझा कर देते हैं अथवा फर्जी ग्राहक सेवा नंबरों के झाँसे में आ जाते हैं। अपराधी इसी जानकारी की कमी का लाभ उठाकर बैंक खातों से धन निकाल लेते हैं। साइबर अपराध का एक खतरनाक स्वरूप फिशिंग और पहचान की ध ोखाधड़ी है। इसमें अपराधी बैंक अधिकारी, सरकारी कर्मचारी, पुलिसकर्मी अथवा किसी प्रतिष्ठित संस्थान का प्रतिनिधि बनकर लोगों से संपर्क करते हैं। वे खाते केवाईसी अपडेट करने, बैंक खाता बंद होने, पार्सल में प्रतिबंधित वस्तु मिलने या किसी सरकारी जाँच का हवाला देकर भय और भ्रम पैदा करते हैं। डिजिटल अरेस्ट के नाम पर होने वाली ठगी इसका सबसे चिंताजनक उदाहरण है। इसमें अपराधी स्वयं को पुलिस, सीबीआई, ईडी या अन्य जाँच एजेंसी का अधिकारी बताकर वीडियो कॉल के माध्यम से लोगों को मानसिक रूप से बंधक बना लेते हैं। गिरफ्तारी, कानूनी कार्रवाई और सामाजिक बदनामी का डर दिखाकर उनसे लाखों रुपये तक वसूल लिए जाते हैं।

तकनीक के दुरुपयोग ने इस चुनौती को और गंभीर बना दिया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी एआई की सहायता से तैयार किए गए डीपफेक वीडियो और नकली आवाजें अब किसी व्यक्ति की पहचान की नकल करने में सक्षम हैं। अपराधी रिश्तेदार, परिचित, वरिष्ठ



अधिकारी अथवा किसी विश्वसनीय व्यक्ति की आवाज में फोन करके आपातकालीन आर्थिक सहायता माँग सकते हैं। पहले जहाँ गलत वर्तनी वाले संदेशों और संदिग्ध ईमेल से ध ोखाधड़ी की पहचान करना अपेक्षाकृत आसान था, वहीं अब अत्याधुनिक तकनीक ने अपराधियों के छल को अधिक विश्वसनीय बना दिया है। एक अन्य बड़ी समस्या म्यूल बैंक खातों की है। ये ऐसे बैंक खाते होते हैं जिनका उपयोग साइबर अपराध से प्राप्त धन को एक खाते से दूसरे खाते में स्थानांतरित करने के लिए किया जाता है। कई बार बेरोजगार युवाओं और आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को कमीशन का लालच देकर उनके बैंक खाते इस्तेमाल किए जाते हैं। कुछ मामलों में लोग बिना पूरी जानकारी के अपने खाते और एटीएम कार्ड दूसरों को सौंप देते हैं। अपराधी इन खातों की श्रृंखला बनाकर धन की वास्तविक पहचान और स्रोत छिपाने का प्रयास करते हैं। इसके अतिरिक्त अंतरराष्ट्रीय साइबर अपराध नेटवर्क, फर्जी सिम कार्ड, नकली पहचान और सीमापार डिजिटल लेन–देन के कारण जाँच एजेंसियों के सामने भी कठिनाइयाँ बढ़ रही हैं।दिलचस्प बात यह है कि साइबर धोखाधड़ी केवल अपराधियों की चालाकी का परिणाम नहीं है, बल्कि कई बार संस्थागत कमजोरियाँ भी इसे बढ़ावा देती हैं। बैंकिंग व्यवस्था की जिम्मेदारी केवल ग्राहकों को डिजिटल सेवाएँ उपलब्ध कराने तक सीमित नहीं हो सकती। बैंकों को संदिग्ध खातों की पहचान, मजबूत केवाईसी प्रक्रिया और असामान्य लेन–देन की निगरानी के लिए प्रभावी व्यवस्था विकसित करनी होगी। यदि किसी खाते में अचानक बड़ी मात्रा में धन आने–जाने लगे अथवा कम समय में कई संदिग्ध लेन–देन हों, तो बैंक की निगरानी प्रणाली को तत्काल सक्रिय होना चाहिए। विशेष रूप से म्यूल खातों की पहचान के लिए बैंकों के बीच सूचनाओं का आदान–प्रदान और समन्वय आवश्यक है।

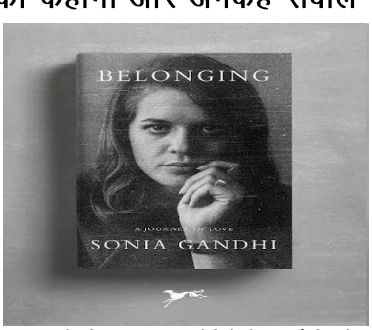
भारतीय रिजर्व बैंक की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। नियामक संस्था के रूप में आरबीआई को बैंकों और वित्तीय संस्थानों के लिए साइबर सुरक्षा के कठोर मानक सुनिश्चित करने चाहिए। ग्राहकों को धोखाधड़ी से बचाने के लिए स्पष्ट दिशा–निर्देश, शिकायतों के समाधान की समयबद्ध व्यवस्था और डिजिटल भुगतान की सुरक्षा की नियमित समीक्षा आवश्यक है। बैंकिंग संस्थानों को यह समझना होगा कि ग्राहक का विश्वास उनकी सबसे बड़ी पूँजी है। यदि डिजिटल भुगतान प्रणाली में सुरक्षा का भरोसा कमजोर पड़ता है, तो डिजिटल अर्थव्यवस्था की विश्वसनीयता भी प्रभावित होती है।

बैंकों के साथ–साथ दूरसंचार कंपनियों की जवाबदेही भी कम नहीं है। साइबर अपराधी फर्जी सिम कार्ड, स्पूफ्ड कॉल और नकली मोबाइल नंबरों का उपयोग करके लोगों को निशाना बनाते हैं। दूरसंचार सेवा प्रदाताओं को संदिग्ध सिम कार्डों की पहचान, फर्जी कनेक्शन पर रोक और शिकायत मिलने पर त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित करनी चाहिए। सरकार की संचार साथी पहल इस दिशा में उपयोगी कदम है। इसके माध्यम से नागरिक संदिग्ध मोबाइल कनेक्शन और मोबाइल फोन से संबंधित धोखाधड़ी की शिकायत कर सकते हैं। लेकिन ऐसी पहलों का लाभ तभी व्यापक होगा, जब आम नागरिकों को इनके उपयोग की जानकारी भी हो।

कानून प्रवर्तन एजेंसियों की भूमिका भी निर्णायक है। साइबर अपराध की प्रकृति ऐसी है कि अपराधी एक राज्य में बैठकर दूसरे राज्य के व्यक्ति को निशाना बना सकता है और धन को तीसरे राज्य के बैंक खाते में स्थानांतरित कर सकता है। इसलिए केवल स्थानीय स्तर पर कार्रवाई पर्याप्त नहीं है। भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (आई4सी), साइबर अपराध पुलिस थानों और विभिन्न राज्यों की पुलिस के बीच बेहतर समन्वय जरूरी है। शिकायत दर्ज होने के बाद डिजिटल साक्ष्यों का संरक्षण, संदिग्ध खातों की पहचान और धन के प्रवाह का पता लगाने की प्रक्रिया तेज होनी चाहिए।

सोनिया गांधी की कहानी और अनकहे सवाल

—प्रफुल्ल गर्ग—



कुछ कहानियां केवल किसी व्यक्ति के जीवन की कहानी नहीं होतीं, बल्कि अपने समय के इतिहास, समाज और राजनीति की भी झलक दिखाती हैं। कांग्रेस की वरिष्ठ नेता सोनिया गांधी की पुस्तक श्टमसवदह पदहरू । श्रवनतदमल वि स्वअमश भी ऐसी ही एक कहानी सामने रखती है। इटली के एक छोटे से शहर में बीते बचपन से लेकर भारत के सबसे प्रभावशाली राजनीतिक परिवारों में से एक का हिस्सा बनने और फिर देश की राजनीति के केंद्र तक पहुंचने का उनका सफर असाधारण रहा है। यह कहानी प्रेम से शुरू होती है, लेकिन समय के साथ इसमें परिवार, जिम्मेदारी, दुख, संघर्ष, सत्ता और सार्वजनिक जीवन के अनेक अध्याय जुड़ते चले जाते हैं।

सोनिया गांधी का जीवन लंबे समय तक लोगों की जिज्ञासा का विषय रहा है। एक विदेशी युवती का भारत आना, पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी से विवाह करना और नेहरू–गांधी परिवार का हिस्सा बनना अपने आप में एक बड़ी घटना थी। लेकिन इस परिवार से जुड़ना केवल एक नए देश और नए समाज को अपनाना नहीं था। इसके साथ एक ऐसे राजनीतिक परिवार की परंपराओं, जिम्मेदारियों और चुनौतियों को भी स्वीकार करना था, जिसका देश की राजनीति में दशकों से महत्वपूर्ण स्थान रहा है। सोनिया गांधी और राजीव गांधी की मुलाकात कैम्ब्रिज में हुई थी। उस समय दोनों की जिंदगी राजनीति की चकाचौंध से दूर थी। राजीव गांधी का स्वभाव अपेक्षाकृत शांत था और वे सक्रिय राजनीति से दूर रहना चाहते थे। सोनिया भी एक सामान्य पारिवारिक जीवन की कल्पना कर रही थीं। दोनों के बीच प्रेम का रिश्ता विकसित हुआ और बाद में विवाह के साथ सोनिया का जीवन भारत से जुड़ गया। किसी दूसरे देश में जाकर वहां की भाषा, संस्कृति, खानपान और सामाजिक व्यवहार को अपनाना आसान नहीं होता। विशेष रूप से तब, जब नया परिवार केवल एक परिवार न होकर देश के सबसे चर्चित राजनीतिक घरानों में से एक हो। सोनिया के सामने भी यही चुनौती थी। उन्हें एक ओर अपने पुराने परिवेश से दूरी बनानी थी, तो दूसरी ओर भारतीय समाज और परिवार के बीच अपनी जगह बनानी थी।

इस कहानी का महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि किसी व्यक्ति की पहचान केवल उसके जन्मस्थान से तय नहीं होती। समय, रिश्ते, अनुभव और परिस्थितियां भी उसकी पहचान को नया रूप देते हैं। सोनिया गांधी के जीवन में भारत धीरे–धीरे केवल रहने का स्थान नहीं, बल्कि उनका अपना देश और सार्वजनिक जीवन का केंद्र बन गया। राजीव गांधी से विवाह के बाद सोनिया का परिचय इंदिरा गांधी से भी एक नए रिश्ते के रूप में हुआ। इंदिरा गांधी केवल परिवार की मुखिया नहीं थीं, बल्कि देश की प्रधानमंत्री और अंतरराष्ट्रीय राजनीति में एक प्रभावशाली व्यक्तित्व भी थीं। ऐसे परिवार में बहू के रूप में अपनी जगह बनाना किसी सामान्य पारिवारिक अनुभव जैसा नहीं हो सकता था। एक तरफ घर की निजी जिंदगी थी, दूसरी तरफ लगातार राजनीतिक गतिविधियां और सार्वजनिक निगाहें। परिवार के सदस्यों के सामान्य निर्णय भी कई बार राजनीतिक अर्थों में देखे जाते थे। सोनिया ने लंबे समय तक अपने निजी जीवन को सार्वजनिक बहस से दूर रखने की कोशिश की। यही कारण है कि उनकी पुस्तक से लोगों की अपेक्षा केवल राजनीतिक घटनाओं का विवरण जानने की नहीं, बल्कि उस परिवार के भीतर के अनुभवों को समझने की भी है। किसी भी राजनीतिक परिवार का सार्वजनिक चेहरा और निजी जीवन हमेशा एक जैसा नहीं होता। बाहर से प्रभावशाली दिखाई देने वाले लोगों के जीवन में भी असुरक्षा, पारिवारिक तनाव, व्यक्तिगत इच्छाएं और कठिन निर्णय होते हैं। किसी संस्मरण की उपयोगिता इसी बात में है कि वह सार्वजनिक छवि के पीछे मौजूद इंसान को सामने लाने का प्रयास करे। सोनिया गांधी के जीवन का सबसे कठिन दौर इंदिरा गांधी और राजीव गांधी की हत्या से जुड़ा रहा। वर्ष 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या और वर्ष 1991 में राजीव गांधी की हत्या ने न केवल देश की राजनीति को बदल दिया, बल्कि उनके परिवार को भी गहरे दुख में डाल दिया।

राजीव गांधी की हत्या के बाद सोनिया गांधी के सामने जीवन की दिशा को लेकर एक बड़ा प्रश्न था। एक ओर पति को खोने का असहनीय दुख था, दूसरी ओर बच्चों और परिवार की जिम्मेदारी। वह सार्वजनिक जीवन से दूरी बनाए रखना चाहती थीं, लेकिन परिस्थितियों ने उन्हें धीरे–धीरे राजनीति के करीब ला दिया।

यहां एक महत्वपूर्ण बात समझने की है कि राजनीति में आने का निर्णय हमेशा महत्वाकांक्षा से प्रेरित नहीं होता। कई बार परिस्थितियां, पारिवारिक विरासत और समर्थकों की अपेक्षाएं भी किसी व्यक्ति को सार्वजनिक भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करती हैं। सोनिया गांधी के मामले में भी व्यक्तिगत दुख और राजनीतिक जिम्मेदारी के बीच का संघर्ष उनके जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा।

सोनिया गांधी का राजनीतिक सफर भारतीय राजनीति के सबसे चर्चित अध्यायों में शामिल है। कांग्रेस संगठन की जिम्मेदारी संभालने से लेकर पार्टी को चुनावी जीत दिलाने तक उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही। वर्ष 2004 में संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन को लोकसभा चुनाव में सफलता मिली। उस समय सोनिया गांधी के प्रधानमंत्री बनने की चर्चा तेज थी। लेकिन उन्होंने प्रधानमंत्री पद स्वीकार नहीं किया और डॉ. मनमोहन सिंह को इस जिम्मेदारी के लिए आगे किया। यह निर्णय भारतीय राजनीति की उन घटनाओं में शामिल है, जिन पर आज भी चर्चा होती है। किसी राजनीतिक दल को चुनावी जीत दिलाने के बाद सर्वोच्च पद से पीछे हटना सामान्य राजनीतिक व्यवहार नहीं माना जाता। इसके पीछे उनके व्यक्तिगत विचार, राजनीतिक परिस्थितियां और उस समय के रणनीतिक निर्णयों की भूमिका रही होगी। हालांकि इस फैसले को लेकर अलग–अलग राजनीतिक व्याख्याएं की जाती रही हैं। कुछ लोगों ने इसे त्याग और राजनीतिक परिपक्वता के रूप में देखा, जबकि कुछ ने इसे सत्ता के एक अलग मॉडल के रूप में समझा। वास्तविकता यह है कि भारतीय राजनीति में इस निर्णय का प्रभाव लंबे समय तक महसूस किया गया।

पोस्टर की राजनीति और जनता के असली मुद्दे

—नीरज शुक्ला—



चुनाव का मौसम हो या किसी बड़े राजनीतिक कार्यक्रम की तैयारी, सड़कों, चौराहों और सरकारी भवनों के आसपास पोस्टर, बैनर और होर्डिंग दिखाई देने लगते हैं। कहीं किसी नेता की बड़ी तस्वीर होती है, कहीं किसी योजना का प्रचार, तो कहीं किसी उपलब्धि का दावा। धीरे–धीरे राजनीति का एक ऐसा रूप सामने आया है, जिसमें जनता की समस्याओं से ज्यादा नेताओं की तस्वीरें और उनके प्रचार के तरीके दिखाई देने लगे हैं। इसे ही आज पोस्टर की राजनीति कहा जा सकता है।

लोकतंत्र में प्रचार का अपना महत्व है। राजनीतिक दलों और जनप्रतिनिधियों को अपनी नीतियां, काम और विचार जनता तक पहुंचाने का अधिकार है। पोस्टर और बैनर इसके पुराने और प्रभावी माध्यम रहे हैं। पहले दीवारों पर हाथ से लिखे नारे और छोटे पोस्टर चुनावी माहौल बनाते थे। समय बदला तो बड़े–बड़े होर्डिंग, डिजिटल प्रिंटिंग और एलईडी स्क्रीन ने उनकी जगह ले ली। अब प्रचार का तरीका इतना बदल गया है कि कई बार किसी क्षेत्र में नेता के काम से पहले उसकी तस्वीर दिखाई देती है।

सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या राजनीति का उद्देश्य जनता की समस्याओं का समाधान करना है या जनता के बीच अपनी छवि को लगातार बनाए रखना? जब किसी सड़क, अस्पताल, स्कूल या सार्वजनिक योजना से ज्यादा चर्चा किसी नेता के पोस्टर की होने लगे, तो राजनीतिक प्राथमिकताओं पर विचार करना जरूरी हो जाता है।

आज पोस्टर केवल सूचना देने का माध्यम नहीं रह गए हैं। वे राजनीतिक शक्ति, प्रभाव और पहचान दिखाने का जरिया भी बन गए हैं। किसी नेता का जन्मदिन हो, चुनावी रैली हो या किसी सरकारी योजना का कार्यक्रम, हर अवसर पर पोस्टर के माध्यम से अपनी मौजूदगी दर्ज कराने की कोशिश होती है। कई बार एक ही कार्यक्रम में इतने पोस्टर लगा दिए जाते हैं कि असली आयोजन पीछे छूट जाता है।

राजनीतिक दलों के भीतर भी पोस्टर की अपनी अलग अहमियत बन गई है। किस नेता की तस्वीर कितनी बड़ी है, किसका नाम ऊपर लिखा है और किसे मंच या प्रचार सामग्री में कितनी जगह मिली है, इससे राजनीतिक हैसियत का अंदाजा लगाया जाने लगा है। कई बार पोस्टर में जगह न मिलना भी संगठन के भीतर नाराजगी का कारण बन जाता है। इससे पता चलता है कि राजनीति में प्रतीकों और तस्वीरों का प्रभाव कितना बढ़ गया है। लेकिन किसी जनप्रतिनिधि की पहचान उसके पोस्टर से नहीं, बल्कि उसके काम से होनी चाहिए। जनता ने किसी नेता को इसलिए नहीं चुना कि वह हर चौराहे पर उसकी तस्वीर देखे। लोगों की अपेक्षा होती है कि उनके क्षेत्र की सड़कें ठीक हों, अस्पतालों में इलाज मिले, स्कूलों में पढ़ाई हो, युवाओं को रोजगार के अवसर मिलें और सरकारी कार्यालयों में उनकी समस्याओं का समाधान हो। दुर्भाग्य से कई बार प्रचार की चमक इन बुनियादी मुद्दों पर भारी पड़ती दिखाई देती है। किसी क्षेत्र में विकास कार्य शुरू होने पर बड़े–बड़े पोस्टर लगा दिए जाते हैं, लेकिन काम पूरा होने के बाद उसकी गुणवत्ता और उपयोगिता पर उतनी चर्चा नहीं होती। उद्घाटन के समय कई जनप्रतिनिधि तस्वीरों में दिखाई देते हैं, लेकिन योजना का लाभ आम लोगों तक पहुंच रहा है या नहीं, इस पर लगातार निगरानी कम दिखाई देती है। सरकारी योजनाओं के प्रचार में भी संतुलन जरूरी है। सरकार को अपनी उपलब्धियों और योजनाओं की जानकारी जनता तक पहुंचानी चाहिए, क्योंकि नागरिकों को यह जानने का अधिकार है कि उनके लिए कौन–सी सुविधाएं उपलब्ध हैं। लेकिन सरकारी प्रचार और किसी व्यक्ति विशेष की छवि निर्माण के बीच अंतर होना चाहिए। सार्वजनिक धन का उपयोग जनहित की जानकारी देने के लिए होना चाहिए, न कि किसी नेता की व्यक्तिगत लोकप्रियता बढ़ाने के लिए।

पोस्टर की राजनीति का एक दूसरा पहलू यह भी है कि इससे स्थानीय समस्याएं अक्सर गायब रहती हैं। किसी कस्बे या गांव के चौराहे पर लगे पोस्टर में बड़े नेताओं के चेहरे तो दिखाई देते हैं, लेकिन उसी क्षेत्र की टूटी सड़क, जलभराव, खराब सफाई व्यवस्था और पेयजल की समस्या का कोई जिक्र नहीं होता। चुनाव के समय इन समस्याओं पर चर्चा जरूर होती है, लेकिन चुनाव समाप्त होते ही कई मुद्दे फिर पीछे चले जाते हैं। इस राजनीति में सोशल मीडिया ने भी नई भूमिका निभाई है। अब पोस्टर केवल दीवारों और सड़कों तक सीमित नहीं हैं। फेसबुक, इंस्टाग्राम और व्हाट्सऐप पर डिजिटल पोस्टर तेजी से साझा किए जाते हैं। किसी नेता की एक तस्वीर को अलग–अलग संदेशों के साथ प्रसारित किया जाता है। कई बार उपलब्धि का दावा इतना बड़ा होता है कि वास्तविक स्थिति समझना मुश्किल हो जाता है। सोशल मीडिया पर लोकप्रियता और जमीन पर जनसमर्थन के बीच अंतर भी हो सकता है। इसलिए किसी पोस्टर या प्रचार सामग्री को ही जनमत का प्रमाण नहीं माना जा सकता।

यह भी जरूरी है कि राजनीतिक प्रचार में भाषा और मर्यादा बनी रहे। विरोधी दलों के नेताओं को नीचा दिखाने, व्यक्तिगत आरोप लगाने और समाज में विभाजन पैदा करने वाले संदेशों से लोकतांत्रिक चर्चा कमजोर होती है। राजनीति में मतभेद स्वाभाविक हैं, लेकिन प्रचार का उद्देश्य विचारों और काम का मुकाबला होना चाहिए, न कि केवल किसी व्यक्ति की छवि खराब करना।

पोस्टर की राजनीति पर चर्चा करते समय यह नहीं भूलना चाहिए कि छोटे कार्यकर्ताओं और स्थानीय संगठनों के लिए पोस्टर अपनी बात रखने का एक महत्वपूर्ण माध्यम हैं। उनके पास बड़े प्रचार अभियान के संसाधन नहीं होते। ऐसे में पोस्टर और बैनर उन्हें जनता तक पहुंचने का अवसर देते हैं। समस्या पोस्टर लगाने में नहीं, बल्कि तब पैदा होती है जब प्रचार को ही राजनीति की सफलता मान लिया जाता है।

लोकतंत्र में जनता को भी अपनी प्राथमिकताएं तय करनी होंगी। किसी नेता की तस्वीर देखकर प्रभावित होने के बजाय उसके काम का हिसाब मांगना होगा। यह पूछना होगा कि चुनाव के समय किए गए वादों में से कितने पूरे हुए, क्षेत्र में कितना विकास हुआ और आम नागरिक की जिंदगी में क्या बदलाव आया। जनप्रतिनिधियों की जवाबदेही केवल चुनाव के दिन तक सीमित नहीं होनी चाहिए।

राजनीतिक दलों को भी आत्ममंथन करना चाहिए। संगठन की मजबूती पोस्टरों की संख्या से नहीं, बल्कि जनता के बीच उसकी सक्रियता से तय होती है। किसी नेता की लोकप्रियता का असली पैमाना उसके नाम के होर्डिंग नहीं, बल्कि लोगों का विश्वास होना चाहिए।

पूंछताछ से नाराज व्यक्ति ने दरोगा की कॉलर पकड़ी, वर्दी का बटन तोड़ा, चौकी पर हंगामा किया



संवाददाता–कुशीनगर। नेबुआ नौरंगिया थाना क्षेत्र के पकडियार पुलिस बूथ पर सोमवार को पूछताछ के दौरान एक व्यक्ति ने हंगामा कर दिया। आरोप है कि उसने बीच–बचाव करने पहुंचे सब इंस्पेक्टर वीरेंद्र यादव की कॉलर पकड़ ली और हाथापाई के दौरान उनकी वर्दी का बटन नोच दिया। मौके पर मौजूद पुलिसकर्मियों और राहगीरों ने किसी तरह बीच–बचाव किया। इसके बाद पुलिस उसे थाने ले गई।।

जानकारी के अनुसार, रामकोला थाना क्षेत्र के विजयपुर निवासी जगदीश प्रसाद को पुलिस ने उसके बेटे सिंहासन पर एक युवती को भगाकर ले जाने के मामले में पूछताछ के लिए बुलाया था। पूछताछ के दौरान जगदीश ने मामले की जानकारी होने से इनकार किया। उसका आरोप है कि सब इंस्पेक्टर वीरेंद्र यादव ने उसके साथ गाली–गलौज और मारपीट की।

खुद को निर्दोष बताते हुए जगदीश पुलिस बूथ से बाहर सड़क पर हंगामा करने लगा। उसे समझाने पहुंचे सब इंस्पेक्टर ने चौकी के अंदर चलकर बातचीत करने को कहा। आरोप है कि इस दौरान जगदीश ने उनकी कॉलर पकड़ ली और शोर–शराबा करने लगा। बीच–बचाव के दौरान उसने दरोगा की वर्दी का बटन तोड़ दिया। हंगामे की सूचना पर पहुंची पुलिस उसे अपने साथ थाने ले गई।

गांव में घुसे सियार ने चार को नोंचा आक्रोशित लोगों ने मार डाला

संवाददाता–बहराइच। बहराइच वन प्रभाग के नानपारा रेंज के नरोत्तमपुर गांव में शनिवार रात गांव घुसे सियार ने बाहर खेल रही बालिका पर झपट्टा मारकर उसे नोंच डाला। बचाने आए माता–पिता समेत चार लोगों को मीलहूलुहान कर दिया। घायलों को मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया है। जहां तीन की हालत गंभीर बनी हुई है। नाराज ग्रामीणों ने घेराबंदी कर सियार को लाठियों से पीट–पीटकर मार डाला। पहले कुत्ते अब सियार के बढ़े हमले से ग्रामीण भयभीत हैं। खैरीघाट थाने के नरोत्तमपुर गांव में शनिवार शाम रिंकी (12) पुत्री गोमती अपने घर के बाहर खेल रही थी। अचानक सियार ने उस पर हमला कर दिया। मौजूद अन्य बच्चे शोर मचाते हुए घर की ओर भागे।

37 गांवों में स्वास्थ्य कैंप लगे 17,890 मरीजों का इलाज



संवाददाता–बलरामपुर। गुरु गोरखनाथ स्वास्थ्य सेवा यात्रा के सातवें संस्करण के पहले दिन बलरामपुर जिले के 37 गांवों में स्वास्थ्य कैंप लगाए गए। डॉक्टरों ने 17,890 मरीजों को देखा। कैंप शिवपुरा, पचपेड़वा, गैसड़ी और तुलसीपुर विकासखंडों में लगाए गए। गढ़वा, सोंगड़ा, नवलगढ़, हेमप

अलग–अलग प्रांतों से आए डॉक्टरों ने मरीजों का इलाज किया। इनमें डॉ. शिवम, डॉ. तावसी, डॉ. अर्पित, डॉ. अमूल्य, डॉ. अनीता, डॉ. अमित कुमार, डॉ. सौरभ, डॉ. विनोद शुक्ला, डॉ. अखिल, डॉ. सूर्याशु, डॉ. राहुल, डॉ. गुरुतेज और डॉ. डीएन सिंह शामिल थे। मरीजों में एनीमिया, शुगर, बीपी, त्वचा, दांत, आंख और पेट से जुड़ी समस्याओं के लोग शामिल थे। सर्दी–जुकाम, बुखार और खांसी के मरीजों की संख्या ज्यादा थी। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. मुकेश रस्तोगी के नेतृत्व में स्थानीय स्तर पर यात्रा में सहयोग किया गया। डॉ. विकल्प मिश्रा, सचिव एनएमओप प्रांत सचिव डॉ. शिवम मिश्राय प्रांत प्रवास प्रमुख डॉ. तावसीय विभाग सेवा प्रमुख श्याम सुंदर और खंड कार्यवाह जसवंत यादव ने होमपुर गणेशपुर, पिपरहवा चौराहा, गढ़वा, जमुनी कला और प्रेमनगर के कैंप देखे। यात्रा संयोजक राम कृपाल शुक्ला ने बताया कि 24 नवंबर को देवीपाटन मंदिर परिसर में मेगा स्वास्थ्य कैंप लगाया जाएगा। नमो बलरामपुर के अध्यक्ष डॉ. शरद सिंह ने पचपेड़वा खंड के कैंप का जायजा लिया।

जयंती पर शिद्दत से याद किए गए सपा संस्थापक स्व. मुलायम सिंह



संवाददाता–महराजगंज। समाजवादी पार्टी के संस्थापक व उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री स्व. मुलायम सिंह यादव की जयंती रविवार को जिला पार्टी कार्यालय में श्रद्धा के साथ मनाई गई। जिलाध्यक्ष विद्यासागर यादव की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में सपाइयों ने उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी और उनके संघर्षों, विचारों व सिद्धांतों को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। नेताजी अमर रहें के नारों से पार्टी कार्यालय गूंज उठा। जिलाध्यक्ष विद्यासागर यादव ने कहा कि नेताजी ने अपना पूरा जीवन किसानों, गरीबों, मजदूरों, नौजवानों व पिछड़े–वंचित वर्गों के अधिकारों की लड़ाई लड़ने में समर्पित कर दिया। उनके संघर्ष और विचार आज भी समाजवादी आंदोलन के लिए प्रेरणास्रोत हैं। उनके बताए रास्ते पर चलकर ही समाजवादी पार्टी को मजबूत किया जा सकता है और जनता की सच्ची सेवा की जा सकती है। उन्होंने कहा कि प्रदेश की जनता महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार व कानून व्यवस्था की स्थिति से परेशान है। अब बदलाव की जरूरत महसूस की जा रही है। कार्यकर्ता अभी से बूथ स्तर पर जुटकर नेताजी के विचारों को जन–जन तक पहुंचाएं। उन्होंने 2027 के विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी की सरकार बनाने और राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव को मुख्यमंत्री बनाने के लिए एकजुट होकर काम करने का आह्वान किया।बाबा साहब वाहिनी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रवण पटेल ने कहा कि नेताजी मुलायम सिंह यादव ने हमेशा सामाजिक न्याय व वंचितों के अधिकारों की लड़ाई लड़ी। उनकी विचारधारा को आगे बढ़ाना ही सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इस दौरान पूर्व विधायक श्रीपति आजाद, विधानसभा अध्यक्ष नौशाद आलम, जिला उपाध्यक्ष प्रणय गौतम, बिंद्रेश कन्नौजिया, दिलीप शुक्ला, रामकृपाल चौरसिया, शमीम खान, अमन खान, आदित्य यादव, सूरज यादव, सुनील त्रिपाठी, शिवेंद्र पटेल, मकसूद आलम, यगदत्त पासवान सहित पार्टी के विभिन्न पदाधिकारी, ब्लॉक अध्यक्ष, सेक्टर प्रभारी व महिला सभा, युवजन सभा, छात्र सभा व लोहिया वाहिनी के कार्यकर्ता मौजूद रहे।

54.58 करोड़ से बनेगा 132/33 केवी विद्युत उपकेंद्र कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने किया शिलान्यास



संवाददाता–देवरिया। पथरदेवा विधानसभा क्षेत्र के तरकुलवा ब्लॉक स्थित नारायणपुर गांव में रविवार को 132/33 केवी विद्युत उपकेंद्र का भूमि पूजन और शिलान्यास हुआ। इसे 54.58 करोड़ रुपए की लागत से बनाया जाएगा। उत्तर प्रदेश पावर ट्रांसमिशन कॉरपोरेशन लिमिटेड की ओर से बनने वाले उपकेंद्र की क्षमता 2 40 एमवीए होगी। ऊर्जा मंत्री ए. के. शर्मा और देवरिया के सांसद शशांक मणि त्रिपाठी कार्यक्रम में वर्चुअल माध्यम से शामिल हुए। कार्यक्रम दोपहर एक बजे से शाम चार बजे तक चला। इस दौरान जरूरतमंदों को कंबल भी बांटे गए।

सूर्य प्रताप शाही ने कहा कि उपकेंद्र बनने से जिले की बिजली व्यवस्था मजबूत होगी। इससे किसानों को सिंचाई, व्यापारियों को कारोबार और विद्यार्थियों को पढ़ाई में सहूलियत मिलेगी। उन्होंने परियोजना की मंजूरी और उसे शुरू कराने में सहयोग करने वालों का आभार जताया।

उन्होंने विपक्ष पर अफवाह फैलाकर लोगों को भ्रमित करने का आरोप लगाया। शाही ने कहा कि योगी सरकार की प्राथमिकता विकास और जनसुविधाएं हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में गांवों तक विकास पहुंचाया जा रहा है।

कार्यक्रम में मुख्य अभियंता, ट्रांसमिशन गोरखपुर पुनीत गुप्ता, तरकुलवा ब्लॉक प्रमुख रामाशीष गुप्ता, पथरदेवा ब्लॉक प्रमुख सुब्रत शाही, तरकुलवा मंडल अध्यक्ष दुर्धत राव, पथरदेवा नगर अध्यक्ष क्रांति सिंह और तरकुलवा नगर अध्यक्ष जनार्दन कुशवाहा मौजूद रहे।

विद्या प्रसाद, प्रवीण यादव, कन्हैया कुशवाहा, रामाशीष गौड़, अंगद कुशवाहा, दर्शन साहनी, डोमा यादव, देवराज चौहान, पवन पाठक, शैलेंद्र त्रिपाठी, विश्वेंद्र प्रताप राव और जीवनपति त्रिपाठी सहित अन्य लोग भी कार्यक्रम में शामिल हुए। संचालन राम बहाल पटेल ने किया।

बृजभूषण ने अखिलेश से संतों की मांग मानने को कहा: चंद्रशेखर–ओवैसी के गठबंधन को बताया बेमेल

संवाददाता–गोण्डा। जयप्रभा गांव में रविवार को श्रीराम कथा में शामिल होने पहुंचे कैसरगंज के पूर्व भाजपा सांसद बृजभूषण शरण सिंह ने अखिलेश यादव से माफी की मांग का समर्थन किया। उन्होंने संतों की ओर से की गई मांग पर कहा कि अखिलेश यादव को संतों की बात मान लेनी चाहिए। वहीं, चंद्रशेखर आजाद और असदुद्दीन ओवैसी के एक साथ आने पर उन्होंने इसे बेमेल गठबंधन बताया। बृजभूषण ने कहा कि इस गठबंधन से नरेंद्र मोदी को नहीं हटा पाएंगे। बृजभूषण शरण सिंह रविवार दोपहर अयोध्या एयरपोर्ट से सैकड़ों गाड़ियों के काफिले के साथ जयप्रभा ग्राम पहुंचे। शाम करीब तीन बजे वहां पहुंचने के बाद उन्होंने व्यास पीठ पर विराजमान राजन जी महाराज का माल्यार्पण कर आशीर्वाद लिया। इसके बाद करीब दो घंटे तक श्रीराम कथा सुनी।

शाम पांच बजे मीडिया से बातचीत में बृजभूषण शरण सिंह ने संतों की ओर से अखिलेश यादव से माफी की मांग किए जाने पर उनका समर्थन किया। उ अब जब राजकुमार दास ने कहा है तो यह अकेले उनका वचन नहीं है, संतों का वचन है। अखिलेश यादव को मान लेना चाहिए। इसमें क्या दिक्कत है। राजकुमार दास ने हमेशा मेरा समर्थन किया है। चाहे वह राज ठाकरे का प्रकरण रहा हो या कोई और प्रकरण, वह हमारे साथ रहे हैं। अयोध्या मेरे साथ रही है और मैं बचपन से लेकर आज तक अयोध्या के साथ हूं। 17–18 साल की उम्र से ही मैं हमेशा अयोध्या के साथ रहा हूं।

चंद्रशेखर आजाद और असदुद्दीन ओवैसी के तीसरे मोर्चे और दोनों के एक साथ खाना खाने को लेकर बृजभूषण शरण सिंह ने कहा कि वे नरेंद्र मोदी को नहीं हटा पाएंगे। बृजभूषण शरण सिंह ने कहा कि ये प्रयास बहुत दिनों से चल रहा है। आजादी के समय में भी दलित और मुस्लिमों को एक मंच पर लाने का प्रयास हुआ था, लेकिन ऐसा नहीं हो पाया। बृजभूषण ने कहा, यह बेमेल गठबंधन है। कानपुर के दंगों का इतिहास उठाकर देखेंगे तो सबसे ज्यादा संघर्ष करने वाली कौम इसी समाज के लोगों की रही है। यही लोग कानपुर को हमेशा सुरक्षित रखते आए हैं। यह गठबंधन कोई मेल नहीं है, बल्कि बेमेल गठबंधन है।



भारत में कन्वर्टेड मुसलमानों को लेकर बृजभूषण शरण सिंह ने कहा, 'मैं तो हमेशा कहता हूं और अपनी बात पर कायम हूं कि आज हमारे देश में 80–90 प्रतिशत ऐसे लोग हैं, जिनकी तीन, चार या पांच पीढ़ी पहले हिंदू थी। उस समय की क्या परिस्थितियां थीं, कुछ भयवश गए और कुछ लालचवश गए। उस विषय में जाने की जरूरत नहीं है। लेकिन हम उनसे हमेशा कहते हैं कि आपके पूर्वज और हमारे पूर्वज भाई थे। यह मेरा हमेशा से कहना रहा है और आज भी कह रहा हूं।' मैं इससे इनकार नहीं करता हूं। जावेद अख्तर के बयान कि सभी हिंदुस्तानियों के खून में राम हैं, पर बृजभूषण शरण सिंह ने कहा, 'ध्यान रखिए, यहां जितने कन्वर्टेड हैं, वे सनातनी हैं। सबका इतिहास मनु से ही शुरू होता है। इसलिए इसमें कोई विवाद का विषय नहीं है।

श्रीराम कथा के मंच से संबोधित करते हुए बृजभूषण शरण सिंह ने कहा कि जयप्रभा ग्राम में जो कुछ भी देख रहे हैं, उससे लगता है कि कथा के क्षेत्र में भी गोंडा का दबदबा है और रहेगा। उन्होंने कहा कि सतयुग में बारह भगवान का अवतार गोंडा की धरती पर हुआ था। त्रेता युग में गोंडा की धरती राम की गौशाला के रूप में रही है। द्वापर में भी गोंडा का दबदबा रहा है। उन्होंने कहा कि कथा में लोग श्रद्धा और आस्था के साथ शामिल हो रहे हैं। भीड़ के कारण बनाई गई व्यवस्थाएं कम पड़ जा रही हैं। इसलिए कहा जा सकता है कि कथा के क्षेत्र में भी गोंडा का दबदबा था, है और रहेगा।

पल्स पोलियो अभियान शुरू, 51,579 बच्चों को दवा पिलाने का लक्ष्य

संवाददाता–कुशीनगर। विशुनपुरा विकासखंड में रविवार को पल्स पोलियो अभियान शुरू हुआ। अभियान के तहत पांच साल तक के 51,579 बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाने का लक्ष्य रखा गया है। बूथ दिवस पर 16,250 बच्चों को दवा दी गई।

प्रभारी चिकित्साधिकारी डॉ. जीशान ने बताया कि अभियान के लिए स्वास्थ्य विभाग ने ग्रामीण इलाकों में बूथ बनाए हैं और स्वास्थ्यकर्मियों की टीमें लगाई हैं। पांच साल तक के सभी बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाई जाएगी। बूथ दिवस के बाद स्वास्थ्यकर्मी घर–घर जाकर उन बच्चों को खुराक देंगे, जो किसी वजह से बूथ तक नहीं पहुंच सके। टीमें गांवों में ऐसे बच्चों की पहचान करेंगी। डॉ. जीशान ने अभिभावकों से अपील की कि वे पांच साल तक के सभी बच्चों को हर अभियान में पोलियो की खुराक जरूर पिलाएं।

मुजुरी पुल के पास सड़क किनारे मिला पूर्व प्रधान का शव

संवाददाता–देवरिया। जिले के खुखुन्दू थाना क्षेत्र के मुजुरी पुल के समीप रविवार को सड़क किनारे एक शव मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। राहगीरों ने सड़क किनारे शव पड़ा देख इसकी सूचना पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव की पहचान कराकर परिजनों को घटना की जानकारी दी। मृतक की पहचान पड़री बनमाली गांव के पूर्व ग्राम प्रधान संजय प्रसाद उर्फ श्यामा (50) पुत्र शिवदेनी प्रसाद के रूप में हुई है। संजय प्रसाद शनिवार की सुबह ही घर से निकले थे। वह भटनी क्षेत्र के चांदपार स्थित एक स्कूल में वाहन चलाने का कार्य करते थे। इसके साथ ही वह गांव के पूर्व प्रधान भी रह चुके थे। रविवार को मुजुरी पुल के पास उनका शव मिलने की खबर फैलते ही बड़ी संख्या में लोग मौके पर पहुंच गए।सूचना मिलने पर खुखुन्दू पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण किया और शव को कब्जे में लेकर



पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। संदिग्ध परिस्थितियों में शव मिलने से मौत को लेकर कई तरह की चर्चाएं हो रही हैं। हालांकि, मौत का वास्तविक कारण पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही स्पष्ट हो सकेगा। पुलिस मामले की जांच में जुटी है। प्रभारी निरीक्षक भवानी भीख राजभर ने बताया कि शव मिलने सूचना मृतक के बेटे गौरव ने दी है। शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दी गई है। मौत के सही कारण का पता पीएम रिपोर्ट आने के बाद ही पता चल सकेगा।

गुरु नानक देव जी के प्रकाश पर्व पर सिख समाज ने निकाला नगर कीर्तन

संवाददाता–महराजगंज। सिखों के प्रथम गुरु श्री गुरु नानक देव जी के 557वें प्रकाश पर्व पर रविवार को नौतनवा के सिख समाज ने नगर कीर्तन निकाला। सिख समाज एवं अन्य समुदाय के लोगों के साथ आसपास के जनपदों तथा पड़ोसी देश नेपाल के सिख भी शोभायात्रा में हिस्सा लेने पहुंचे थे। नगर कीर्तन के दौरान गुरु के भजन–कीर्तन से पूरा नगर रमणीक रहा, तो वहीं बोले सो निहाल–सत श्री अकाल, राज करोगे खालसा, देग–तेग फतेते पंथ की जीत हो...जैसे जयघोष लगते रहे। कस्बे के दर्जन भर चौक चौराहे पर समाजसेवियों व जनप्रतिनिधियों ने स्टाल लगाकर नगर कीर्तन में सम्मिलित लोगों का पुष्प वर्षा कर स्वागत किया।



गुरु सिंह सभा गुरुद्वारा से गुरु ग्रन्थ साहिब की अगुवाई में नगर कीर्तन निकला। इसमें गुरु का ध्वज लेकर चल रहे युवा पूरी सादगी से गुरु के भजनों में लीन रहे। पीछे गतका खेल रहे युवा अपने हैरतअंगेज करतबों से सभी को रोमांचित कर रहे थे। शोभा यात्रा में आगे परंपरागत वेशभूषा में सुसज्जित पंच प्यारे निशांत साहिब थामे चल रहे थे। श्रद्धालु सड़क को पानी से धोते हुए साफ कर रास्ते में फूल वर्षा कर सजी–धजी गुरु ग्रन्थ साहिब की पालकी की अगुवानी कर रहे थे। उनके पीछे महिलाएं भजन–कीर्तन एवं गुरुवाणी कर पूरे नगर के वातावरण को भक्तिमय बना रही थीं। सबसे पीछे बच्चे अपने नृत्य और अन्य कार्यक्रमों से सभी का मन मोह रहे थे। यह नगर कीर्तन गुरुद्वारा साहिब से हनुमान चौक होते हुए पुराना नौतनवा होकर स्टेशन चौराहा पहुंचा तो भाजपा नेता जितेंद्र जायसवाल ने पंचप्यारे को फूल माला पहनाकर स्वागत किया। शोभायात्रा घंटा घर, अस्पताल तिराहा से गांधी चौक तक गया। वहां से वापस गुरुद्वारा आकर समाप्त हो गया। शोभायात्रा का मुस्लिम समाज के लोगों ने भी स्वागत किया और स्टार लगाकर जलपान कराया। बैंक ऑफा बड़ौदा चौराहे पर सैयद अफजाल के नेतृत्व में मौजूद मुस्लिम समाज ने यात्रा में शामिल भक्तों का अभिवादन किया।

इस दौरान सिख समाज के अध्यक्ष सरदार मनजीत सिंह, परमजीत सिंह उर्फ बॉबी, रणजीत सिंह, परमजीत सिंह, पम्मे सिंह, सरदार मनीष सिंह, सरदार अजीत सिंह, सरदार मंजीत सिंह, मनमीत सिंह, सरदार सतनाम सिंह, सरदार गुरुचरण सिंह, लक्की सिंह, सरदार सहेंद्र सिंह, मनजीत कौर, सरदार दलजीत सिंह, सरदार दिलीप सिंह, सतविंदर कौर, तजिंदर कौर, सतवीर सिंह, इंद्रजीत कौर, रितु कौर, अमरजीत कौर, गुरमीत कौर, गुरविंदर सिंह सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल रहे।

ट्रेन की चपेट में आने से युवक की मौत

संवाददाता–देवरिया। सदर रेलवे स्टेशन के पश्चिमी छोर पर शनिवार देर रात ट्रेन की चपेट में आने से करीब 25 वर्षीय युवक की मौत हो गई। उसकी पहचान नहीं हो सकी है। जीआरपी ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। शनिवार रात करीब एक बजे रेलवे ट्रैक पर युवक का शव मिला। आसपास के लोगों ने जीआरपी को सूचना दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच की। युवक की मौत ट्रेन की चपेट में आने से होने की आशंका जताई गई। युवक ने टी–शर्ट और लोअर पहन रखा था। उसके पास एक मोबाइल फोन मिला, लेकिन लॉक होने के कारण उससे पहचान नहीं हो सकी।

गोदाम में मिली 8623 बोरी धान, आनलाइन स्टाक शून्य मिलने पर नोटिस



संवाददाता–महराजगंज। कोठीभार थाना क्षेत्र के ग्राम सभा सोहट स्थित एक लाइसेंसी गल्ला कारोबारी के गोदाम पर मंडी समिति निचलौल की टीम की छापेमारी में बड़े पैमाने पर खाद्यान्न का भंडार मिला। वहीं इस खाद्यान्न का स्टॉक ऑनलाइन पोर्टल पर शून्य दर्ज पाया गया। इसके बाद टीम ने नोटिस जारी करते हुए फर्म का लाइसेंस निलंबित करते हुए जुर्माना लगाने की नोटिस जारी कर जवाब–तलब किया गया है। छापेमारी के दौरान मौके पर धान, चावल और गेहूं की भारी मात्रा मिलने तथा ऑनलाइन अभिलेखों में स्टॉक का विवरण नहीं होने से मंडी समिति ने फर्म के प्रोपराइटर को नोटिस जारी कर जवाब–तलब किया है।

निर्धारित समय में संतोषजनक स्पष्टीकरण नहीं मिलने पर लाइसेंस निलंबन सहित वित्तीय कार्रवाई की चेतावनी दी गई है। निचलौल मंडी समिति के प्रभारी सचिव विनोद कुमार शर्मा और मंडी सहायक श्यामनंदन साहनी ने रविवार अपराह्न ग्राम सोहट स्थित इस गल्ला कारोबारी के गोदाम पर छापा मारा। इस दौरान प्रोपराइटर मौके पर मौजूद नहीं मिले। उनकी जगह मिले एक दूसरे शख्स ने स्वयं को प्रोपराइटर का पुत्र बताया। इस दौरान विशुनपुरा निवासी एक व्यक्ति के धान की खरीद भी होती मिली।

जांच के दौरान परिसर और गोदाम में धान, चावल एवं गेहूं का भंडारण पाया गया। अधिकारियों ने मौके पर कुल 8623 बोरी धान बरामद किया, जिसका कुल वजन 3630.28 कुंतल दर्ज किया गया। इसके अतिरिक्त 100 बोरी गेहूं का वजन 60 कुंतल तथा चावल का कुल वजन 58.80 कुंतल पाया गया। धान की 10 बोरियों का वजन कराने पर भी वजन में अंतर सामने आया। इसका औसत वजन लगभग 42.1012 किलोग्राम दर्ज किया गया। खाद्यान्न की इतनी बड़ी मात्रा मिलने के बावजूद ऑनलाइन पोर्टल से प्राप्त स्टॉक रजिस्टर में फर्म का भंडार शून्य मिला। इसी आधार पर अधिकारियों ने मौके पर उपलब्ध खाद्यान्न का 6–आर प्रपत्र जारी नहीं किए जाने के संबंध में स्पष्टीकरण मांगा है। मंडी सहायक श्यामनंदन साहनी और प्रभारी सचिव विनोद कुमार शर्मा ने प्रोपराइटर को दो कार्यदिवस के भीतर मंडी समिति कार्यालय निचलौल में उपस्थित होकर स्पष्टीकरण व सत्यापन प्रस्तुत करने का निर्देश दिया है। ऐसा नहीं करने पर लाइसेंस निलंबित करने सहित मंडी अधिनियम के तहत कार्रवाई की चेतावनी दी है। प्रभारी सचिव विनोद कुमार शर्मा ने बताया कि मौके पर मिले स्टॉक का एक भी सिक्स आर नहीं मिला है। इसके लिए उसे नोटिस जारी की गई है। गल्ला कारोबारी ने मंडी अधिनियम का उल्लंघन किया है। ऐसे में उसके खिलाफ जुर्माना और लाइसेंस निलंबन की कार्रवाई की जाएगी।

अवैध संबंध के शक में की पत्नी की हत्या, आरोपी गिरफ्तार

संवाददाता–गोण्डा। कौड़िया थाना क्षेत्र के कोटिया मदारा गांव में पत्नी की हत्या के मामले में पुलिस ने 24 घंटे के भीतर आरोपी पति मनोज कुमार शुक्ला को गिरफ्तार कर लिया। जांच में सामने आया कि आरोपी को पत्नी के चरित्र पर शक था। इसी बात को लेकर शुक्रवार रात नशे की हालत में घर पहुंचे मनोज ने मामूली विवाद के बाद पत्नी पर कुल्हाड़ी से हमला कर दिया था। घटना के समय बेटे ने पिता का विरोध किया, लेकिन आरोपी ने उसे भी जान से मारने की धमकी दी थी। पुलिस के मुताबिक, मनोज को करीब चार साल पहले पानीपत जाने के बाद से पत्नी सुमन के किसी दूसरे व्यक्ति से संबंध होने का शक था। उसे लगता था कि सुमन किसी अन्य व्यक्ति से बातचीत करती है। इसी बात को लेकर दोनों के बीच अक्सर विवाद होता था। शुक्रवार (20 नवंबर) रात करीब 12 बजे मनोज नशे की हालत में घर पहुंचा। उसने पत्नी से चाय बनाने को कहा। सुमन ने चाय बनाने से मना कर दिया तो मनोज को लगा कि वह उसे नजरअंदाज कर किसी दूसरे व्यक्ति से बातचीत करने में व्यस्त है। इसी बात पर गुस्से में उसने घर में रखी कुल्हाड़ी उठाई और सुमन के सिर पर वार कर दिया। इससे उसकी मौत हो गई। मां की हत्या होते देख बेटे किशन ने पिता का विरोध किया। इस पर मनोज ने उसे भी जान से मारने की धमकी देकर चुप कराने की कोशिश की। हालांकि, किशन ने हिम्मत दिखाई और घर से बाहर निकलकर डायल 112 पर पुलिस को सूचना दी। सूचना पर पहुंची कौड़िया पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा। मामले में मृतका की मां सीतावती तिवारी की तहरीर पर आरोपी पति मनोज कुमार शुक्ला और उसकी मां के खिलाफ हत्या समेत अन्य गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया था। अपर पुलिस अधीक्षक पश्चिमी नितेश सिंह ने बताया कि 20 नवंबर की रात पत्नी के चरित्र पर शक के चलते पति ने हत्या की थी। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। उसके कब्जे से वारदात में इस्तेमाल कुल्हाड़ी भी बरामद हुई है। उन्होंने बताया कि मामले में आरोपी की मां की भूमिका की भी गंभीरता से जांच की जा रही है। जांच में जो भी तथ्य सामने आएंगे, उनके आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

स्वास्थ्य केंद्र में 106 मरीजों का मुफ्त इलाज

संवाददाता–महराजगंज। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रम्हौली में रविवार को 106 मरीजों का मुफ्त इलाज किया गया। डॉक्टर मदन चौरसिया के नेतृत्व में मरीजों की जांच कर उन्हें सलाह दी गई। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य समस्या होने पर समय से अस्पताल पहुंचकर डॉक्टर से सलाह लें।

मरीजों को उनकी बीमारी के अनुसार मुफ्त दवाएं भी दी गईं। केंद्र में खांसी, जुकाम और बुखार समेत मौसमी बीमारियों की जांच की गई। डॉक्टर मदन चौरसिया ने बदलते मौसम में सावधानी बरतने, साफ–सफाई रखने और खानपान पर ध्यान देने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य समस्या होने पर समय से अस्पताल पहुंचकर डॉक्टर से सलाह लें।

गौरी शंकर शरण बने जानकीवर भवन के महंत

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

अयोध्या। प्राचीन वैष्णव परंपरा के निर्वहन के क्रम में जानकीवर भवन के नए महंत के रूप में गौरी शंकर शरण को दायित्व सौंपा गया। पूर्व महंत जानकीवर शरण के तेरहवीं संस्कार के अवसर पर संत–महंतों की उपस्थिति में श्री लक्ष्मण किला के पीठाधीश्वर महंत मैथिली रमण शरण के संयोजन में वैदिक एवं सनातन वैष्णव रीति के अनुसार कंठी, चादर और तिलक प्रदान कर उन्हें महंत नियुक्त किया गया।इस अवसर पर महंत मैथिली रमण शरण ने बताया कि जानकीवर भवन श्री लक्ष्मण किला की परंपरा से संबद्ध मंदिर है।

पूर्व महंत जानकीवर शरण ने अपने जीवनकाल में ही गौरी शंकर शरण को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया था। मंदिर की परंपराओं, ठाकुरजी की सेवा, उत्सव एवं धार्मिक अनुष्ठानों के सुव्यवस्थित संचालन के निमित्त उन्हें महंताई का दायित्व प्रदान किया गया है।

नवनियुक्त महंत गौरी शंकर शरण ने कहा कि पूर्वाचार्यों द्वारा स्थापित मर्यादाओं एवं व्यवस्थाओं के अनुरूप मंदिर की परंपरा को आगे बढ़ाना उनकी प्राथमिकता होगी। संत सेवा, गौ सेवा और वैष्णव सनातन धर्म की सेवा का क्रम पूरी निष्ठा से निरंतर चलता रहेगा।इस अवसर पर जानकी घाट बड़ा स्थान के महंत जन्मेजय शरण, खाकचौक के महंत बृजमोहन दास, सियाराम किला के महंत करुणा निधान शरण, महात्यागी महंत सीताराम दास, पुजारी रमेश दास, महंत जानकी शरण, महंत छोटू शरण सहित सैकड़ों संत–महंत उपस्थित रहे।

चार साल एक माह की सेवा के बाद बनकटी से विदा हुए बीईओ अरुण कुमार यादव



सिद्धार्थनगर हुआ स्थानांतरण, शिक्षकों और कर्मचारियों ने समारोहपूर्वक दी भावभीनी विदाई

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। विकास खंड बनकटी के खंड शिक्षा अधिकारी अरुण कुमार यादव का सिद्धार्थनगर जनपद में स्थानांतरण होने पर रविवार को बनकटी बीआरसी परिसर में विदाई समारोह आयोजित किया गया। यहां चार साल एक माह तक सेवाएं देने के बाद विदा हो रहे बीईओ को शिक्षकों और कर्मचारियों ने भावभीनी विदाई दी। इस दौरान माहौल भावुक हो उठा।

समारोह में शिक्षकों और कर्मचारियों ने पुष्पमाला पहनाकर, अंगवस्त्र ओढ़ाकर तथा स्मृति चिह्न भेंटकर उनका सम्मान किया। वक्ताओं ने उनके कार्यकाल की सराहना करते हुए कहा कि अरुण कुमार यादव एक कुशल प्रशासक होने के साथ ही सरल, सहज और संवेदनशील स्वभाव के अधिकारी रहे। उन्होंने हमेशा शिक्षकों की समस्याओं को गंभीरता से सुना और उनके समाधान का प्रयास किया।

शिक्षकों ने कहा कि उनके कार्यकाल में विद्यालयों में नामांकन और बच्चों की उपस्थिति बढ़ाने के साथ ही शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए विशेष प्रयास किए गए। विद्यालयों के निरीक्षण के दौरान वे शिक्षकों से संवाद करने के साथ बच्चों से भी उनकी पढ़ाई के संबंध में जानकारी लेते थे।

अपने संबोधन में अरुण कुमार यादव ने कहा कि बनकटी में बिताए चार साल एक माह का समय उनके लिए परिवार के साथ रहने जैसा रहा। यहां के शिक्षकों और कर्मचारियों से उन्हें हमेशा स्नेह और सहयोग मिला। उन्होंने पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करने का प्रयास किया। बनकटी की माटी और यहां के लोगों का स्नेह हमेशा याद रहेगा। उन्होंने शिक्षकों से बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए इसी लगन और समर्पण के साथ कार्य करते रहने की अपील की। इस अवसर पर अभय सिंह यादव, अजय पाल,मोहम्मद हासिम, मोहम्मद इकबाल,चंद्रशेखर शर्मा,राघवेंद्र उपाध्याय, चंद्रशेखर वर्मा,सतीश चंद्र यादव, अतुल कृष्ण राज, रघुवर पांडेय, ध्रुव चंद्र यादव, राशि, नीलम आदि विभिन्न विद्यालयों के शिक्षक और कर्मचारी मौजूद रहे। अंत में सभी ने उन्हें नई जिम्मेदारी के लिए शुभकामनाएं देते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

135 दिव्यांग बच्चों को सहायक उपकरण मिले



संवाददाता–सिद्धार्थनगर। खुनियांव ब्लॉक संसाधन केंद्र पर रविवार को दिव्यांग बच्चों को सहायक उपकरण बांटे गए। बेसिक शिक्षा विभाग के समेकित शिक्षा कार्यक्रम के तहत हुए इस कार्यक्रम में इटवा के पूर्व विधायक डॉ. सतीश द्विवेदी मुख्य अतिथि थे।

कार्यक्रम में 135 बच्चों को ट्राई साइकिल, व्हीलचेयर, बैसाखी, ब्रेल किट, सीपी चेयर और कान की मशीन सहित अन्य उपकरण दिए गए।

डॉ. सतीश द्विवेदी ने कहा कि दिव्यांग बच्चे समाज का हिस्सा हैं। उनकी प्रतिभा निखारने के लिए उन्हें अवसर और सहयोग देना सभी की जिम्मेदारी है। दिव्यांगता किसी बच्चे की प्रतिभा और आगे बढ़ने की राह में बाधा नहीं बननी चाहिए।

उन्होंने कहा कि सरकार दिव्यांग बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने और आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रयास कर रही है। उन्होंने अभिभावकों और शिक्षकों से बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और विकास पर ध्यान देने और उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने की अपील की।

उन्होंने कहा कि जरूरतमंद लोगों तक सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाना सरकार की प्राथमिकता है।

कार्यक्रम में नगर पंचायत इटवा अध्यक्ष विकास जायसवाल, सभासद घनश्याम जायसवाल, प्रमोद कन्नौजिया, तरुण सिंह, अजय सिंह, धर्मेंद्र मौर्य, रामविलास वर्मा, खंड शिक्षा अधिकारी तारकेश्वर पांडेय, स्थानीय नागरिक और बच्चों के अभिभावक मौजूद रहे।

दिल्ली विश्वविद्यालय से घनश्याम सिंह यादव को भूगोल विषय में पीएच.डी. की उपाधि



बस्ती/नई दिल्ली (आभा)। उत्तर प्रदेश के बस्ती जनपद के कटरा निवासी घनश्याम सिंह यादव ने प्रतिष्ठित दिल्ली विश्वविद्यालय से भूगोल विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएच.डी.) की उपाधि अर्जित कर उच्च शिक्षा एवं अकादमिक अनुसंधान के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। उनकी इस सफलता से परिवार, क्षेत्र एवं जनपद के शैक्षणिक गौरव में वृद्धि हुई है। दिल्ली विश्वविद्यालय का 103वाँ वार्षिक दीक्षांत समारोह शुक्रवार, 20 नवंबर 2026 को विश्वविद्यालय के स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स स्थित बहुउद्देशीय सभागार में आयोजित किया गया। समारोह में केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने की। इस गरिमामय अकादमिक समारोह में विभिन्न संकायों के शोधार्थियों को उपाधियाँ प्रदान की गईं। इसी क्रम में घनश्याम सिंह यादव को भूगोल विषय में पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई। घनश्याम सिंह यादव ने अपना शोधकार्य प्रो. पुण्यतोया पात्रा के कुशल निर्देशन एवं अकादमिक मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक संपन्न किया। उनकी यह उपलब्धि दीर्घकालीन अध्ययन, अनुसंधान के प्रति प्रतिबद्धता, बौद्धिक जिज्ञासा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं निरंतर अकादमिक साधना का प्रतिफल है। शोध के क्षेत्र में उनकी यह सफलता ज्ञानार्जन, अनुशासन और उच्च शैक्षणिक उत्कृष्टता के प्रति उनके समर्पण को रेखांकित करती है।

अपनी इस महत्वपूर्ण शैक्षणिक उपलब्धि के अवसर पर घनश्याम सिंह यादव ने अपने आध्यात्मिक गुरु परम संत जयगुरुदेव महाराज जी, मथुरा के आशीर्वाद, आध्यात्मिक प्रेरणा एवं जीवन मूल्यों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। उन्होंने अपने माता–पिता, शोध निर्देशक, गुरुजनों तथा परिवार के सतत सहयोग, प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन को अपनी अकादमिक यात्रा का महत्वपूर्ण आधार बताया। उनके पिता श्री हरिराम यादव, माता श्रीमती मूर्ति देवी यादव, ज्येष्ठ भ्राता डॉ. कौशल किशोर यादव तथा धर्मपत्नी डॉ. रजनी यादव ने इस विशिष्ट उपलब्धि पर प्रसन्नता एवं गौरव व्यक्त करते हुए उनके उज्ज्वल अकादमिक भविष्य की मंगलकामना की। घनश्याम सिंह यादव की यह सफलता व्यक्तिगत शैक्षणिक उपलब्धि के साथ–साथ बस्ती जनपद के लिए भी गौरव का विषय है। उनकी अकादमिक यात्रा यह दर्शाती है कि शोध के प्रति गंभीर प्रतिबद्धता, निरंतर परिश्रम, वैचारिक अनुशासन एवं दृढ़ संकल्प के माध्यम से उच्च शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ अर्जित की जा सकती हैं।

उनकी इस उपलब्धि से परिजनों, शिक्षाविदों, मित्रों एवं शुभचिंतकों में हर्ष का वातावरण है। यह सफलता विशेष रूप से ग्रामीण एवं क्षेत्रीय पृष्ठभूमि से आने वाले उन विद्यार्थियों और युवा शोधार्थियों के लिए प्रेरणास्रोत है, जो उच्च शिक्षा, अनुसंधान एवं अकादमिक उत्कृष्टता के क्षेत्र में अपनी पहचान स्थापित करने के लिए प्रयासरत हैं।

राम मंदिर ट्रस्ट की बैठक में कई नियुक्तियों पर होगा फैसला



संवाददाता–अयोध्या। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की महत्वपूर्ण बैठक दो दिसंबर को अयोध्या में होगी। एक सितंबर को ट्रस्ट की नई टीम के गठन के बाद यह पहली बैठक होगी। इसमें ट्रस्ट के कामकाज को नई दिशा देने के साथ ही कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए जाने की संभावना है। बैठक में नए प्रवक्ता की घोषणा के अलावा कुछ अन्य पदों पर नियुक्तियों को भी अंतिम रूप दिया जा सकता है। चढ़ावा चोरी की घटना के बाद एक सितंबर को हुई ट्रस्ट की बैठक में नए पदाधिकारियों और सदस्यों का चयन किया गया था। नई टीम गठित होने के बाद अब सभी 15 सदस्यों की मौजूदगी में आगामी कार्ययोजना और मंदिर की व्यवस्थाओं पर मंथन होगा। बैठक में शामिल होने के लिए ट्रस्ट के महासचिव गोविंद देव गिरि 30 नवंबर को ही अयोध्या पहुंच जाएंगे। बैठक में ट्रस्ट के नए प्रवक्ता की नियुक्ति प्रमुख एजेंडे में शामिल हो सकती है। इसके साथ ही ट्रस्ट के कामकाज को तकनीकी रूप से और व्यवस्थित करने के लिए आईटी सलाहकार की नियुक्ति पर भी चर्चा होने की संभावना है। कुछ अन्य महत्वपूर्ण पदों पर नई नियुक्तियों को लेकर भी निर्णय हो सकता है। बैठक में सितंबर से नवंबर तक की अवधि का आय–व्यय विवरण भी सभी ट्रस्टियों के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा। इसके आधार पर मंदिर की व्यवस्थाओं, संचालन और आगामी कार्यों से जुड़े वित्तीय पहलुओं पर चर्चा होगी।

राम मंदिर में साधु–संतों के लिए सुगम दर्शन व्यवस्था का मुद्दा भी बैठक में उठेगा। संतों को दर्शन के दौरान होने वाली असुविधाओं को दूर करने और उनके लिए अलग अथवा सरल दर्शन व्यवस्था विकसित करने के विकल्पों पर विचार किया जा सकता है।

इसके अलावा एक सितंबर को हुई बैठक के बाद मंदिर परिसर में लागू की गई नई व्यवस्थाओं की समीक्षा भी होगी। इन व्यवस्थाओं से जुड़ी जानकारी सार्वजनिक किए जाने की संभावना है।

2000 करोड़ की 150 एकड़ जमीन कब्जामुक्त, बदलेंगी शहर की सूरत

संवाददाता–गोरखपुर। सरकारी भूमि पर कहीं दुकानें तो कहीं दूसरे निर्माण खड़े कर दिए गए थे। कई जगहों पर बेशकीमती भूमि पर वर्षों से कब्जा था। नगर निगम ने अभियान चलाकर ऐसे भूमि को कब्जामुक्त कराकर अपने लैंड बैंक में जबरदस्त इजाफा किया है। अब नगर निगम ने ऐसी भूमि को अपने कब्जे में लेकर शहर के विकास के लिए उनका रास्ता खोल दिया है। 165 गांवों में चलाए गए अभियान के दौरान 169 स्थानों से 60.690 हेक्टेयर सरकारी भूमि खाली कराई गई है। करीब 149.89 एकड़ में फैली इस भूमि की अनुमानित कीमत 2,000 करोड़ रुपये बताई गई है। खास बात यह है कि नगर निगम ने अब इस संपत्ति पर शहर की जरूरतों को पूरा करने के लिए इस्तेमाल करने की तैयारी शुरू कर दिया है। मुक्त कराई गई भूमि का ब्योरा नगर निगम के अभिलेखों में 297 गाटा नंबरों के रूप में दर्ज है। इनमें कई स्थान ऐसे हैं, जहां जमीन की कीमत करोड़ों रुपये में है। इन संपत्तियों को कब्जामुक्त कराने के बाद इनके उपयोग की योजना तैयार की गई है। इससे शहर में सार्वजनिक सुविधाओं के विस्तार के लिए जमीन की उपलब्धता बढ़ेगी।

कब्जामुक्त कराई गई भूमि में एकला बांध के पास बगिया टोला की भूमि सबसे अधिक मूल्यवान बताई गई है। इसकी अनुमानित कीमत 364 करोड़ रुपये है। मेवातीपुर उर्फ चौनपुर में घोष कंपनी चौराहे की जमीन 297 करोड़ रुपये की है। मेहदवा में पुलिस चौकी ट्रांसपोर्ट नगर के दक्षिण स्थित भूमि का मूल्य 234.45 करोड़ और गुलरिहा थाने के पश्चिम की जमीन का मूल्य 205 करोड़ रुपये आंका गया है। इन चार स्थानों की जमीन का कुल अनुमानित मूल्य ही 1,100 करोड़ रुपये से अधिक है।



इसके अलावा जटेपुर में शिप्रा लान के बगल की जमीन 45 करोड़, सहारा स्टेट गेट के सामने सिक्टौर की जमीन 30 करोड़ और मेहदवा में आकृति शोरूम आर्बिट के पूर्व की भूमि 22.20 करोड़ रुपये की है। बशारतपुर में सुइडिया कुआं के पास की जमीन का मूल्य 20.16 करोड़ और झरवा खिरवनिया मार्ग की जमीन का मूल्य 18.80 करोड़ रुपये है। खोराबार उर्फ सूबा बाजार में मेडिसिटी स्थित बीआरडी मेडिकल कालेज अस्पताल के पास की जमीन 18 करोड़, जंगल तिकोनिया नंबर एक में पिपराइच रोड पर पूर्व विधायक के फार्म हाउस के पास की जमीन 17 करोड़ और महादेव झारखंडी टुकड़ा नंबर तीन के सैनिक विहार कालोनी की जमीन 16 करोड़ रुपये की बताई गई है।

नगर निगम ने खाली कराई गई भूमि पर कई तरह की परियोजनाएं विकसित करने का प्रस्ताव बनाया है। कहीं आटोमैटिक वेदर स्टेशन स्थापित होगा तो कहीं कचरे के वैज्ञानिक निस्तारण के लिए एमआरएफ सेंटर बनाया जाएगा। ई–आटो चार्जिंग स्टेशन, पशु शवदाह गृह, कल्याण मंडपम, सरकारी बोरिंग, पुलिस चौकी, एनिमल बर्थ कंट्रोल सेंटर और वमन हास्टल भी प्रस्तावित हैं। कुछ स्थानों पर निर्माण की प्रक्रिया चल रही है।

नगर निगम ने करीब 2000 करोड़ की कीमत की भूमि को कब्जामुक्त कराया गया है। इन भूमि पर निगम की ओर से विभिन्न परियोजनाओं को मूर्तरूप देने की योजना है। इन परियोजनाओं के पूरा होने से शहर को नई सुविधाएं मिलेंगी और सरकारी जमीन का उपयोग भी सुनिश्चित होगा।

ट्रेलर की टक्कर से बुजुर्ग की मौत

संवाददाता–अम्बेडकरनगर। रविवार सुबह तेज रफ्तार ट्रेलर की टक्कर से 70 वर्षीय बुजुर्ग की मौत हो गई। हादसे के बाद मौके पर अफरातफरी मच गई। हादसे के बाद भाग रहे ट्रेलर को हंसवर पुलिस ने कब्जे में ले लिया है। आगे की कार्रवाई की जा रही है।

हादसा बसखारी थाना क्षेत्र के मसड़ा बाजार में हुआ। बताया गया कि सम्मनपुर थाना क्षेत्र के बरौली निवासी बहाऊ (70) सुबह करीब 9 बजे मसड़ा बाजार में थे। इसी दौरान अकबरपुर से बसखारी की ओर जा रहे एक ट्रेलर ने उन्हें टक्कर मार दी। टक्कर लगने से बहाऊ गंभीर रूप से घायल हो गए।

हादसे के बाद स्थानीय लोगों ने तत्काल एंबुलेंस बुलाकर उन्हें सीएचसी, बसखारी पहुंचाया। वहां डॉक्टरों ने उपचार शुरू किया, लेकिन बुजुर्ग की जान नहीं बच सकी। उनकी मौत की खबर से परिजनों में कोहराम मच गया।

उधर, हादसे के बाद ट्रेलर लेकर भाग रहे चालक को हंसवर पुलिस ने पकड़ लिया। वाहन को कब्जे में लिया है। बसखारी थानाध्यक्ष अरविंद कुमार पांडेय ने बताया कि मामले में तहरीर मिली है। ट्रेलर चालक के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

भागवत कथा से बड़ा कोई सत्य नहीं – विद्याधर भारद्वाज



– कुदरहा ब्लाक के छरदही गांव में चल रहा नौ दिवसीय भागवत कथा

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

कुदरहा, (बस्ती)। भगवान के सम्मुख और उनके शरणागत होने का एक मात्र साधन भागवत कथा है। भागवत कथा से कल्याणकारी और कोई दूसरा साधन नहीं है। इसलिए मनुष्य को व्यस्त जीवन से समय निकालकर कथा का श्रवण करना चाहिए। यह सदविचार कांची पीठ अवधनाम से पधारे कथावाचक विद्याधर भारद्वाज महराज ने छरदही गांव में दुग्धेश्वर नाथ शिव मंदिर मे चल रही नव दिवसीय संगीतमयी श्रीमद्भागवत कथा के पहले दिन व्यास पीठ से प्रवचन सत्र में व्यक्त किया। उन्होंने कथा को विस्तार देते हुए कहा कि भागवत कथा से बड़ा कोई सत्य नहीं है। जो अमृत के समान है। कथा को पांचवां वेद कहा गया है, जिसे पढ़ सकते हैं और सुन सकते हैं। कृष्ण हिन्दू धर्म में विष्णु के अवतार हैं। सनातन धर्म के अनुसार भगवान विष्णु सर्वपापहारी पवित्र और समस्त मनुष्यों को भोग तथा मोक्ष प्रदान करने वाले प्रमुख देवता हैं। जब–जब इस पृथ्वी पर असुर एवं राक्षसों के पापों का आतंक व्याप्त होता है, तब–तब भगवान विष्णु किसी किसी रूप में अवतरित होकर अपने भक्तों की रक्षा करते हैं। भगवान विष्णु अभी तक तेईस अवतारों को धारण किए हैं। लेकिन इन अवतारों में उनके सबसे महत्वपूर्ण अवतार श्रीराम और श्रीकृष्ण का अवतार है। मुख्य यजमान हरि गोविंद द्विवेदी, शकुंतला देवी, रामगोपाल दुबे, इंद्रजीत दुबे, विशाल कुमार, शशांक शेखर, वशिष्ठ दुबे, राम भारत, सुरेश चंद्र द्विवेदी, पप्पू दुबे, रवि प्रकाश, विनय दुबे सहित तमाम भक्त मौजूद रहे।

आयुष विश्वविद्यालय में दिसंबर से शुरू होगी बीएएमएस की पढ़ाई, 100 सीटों पर होंगे दाखिले



संवाददाता–गोरखपुर। महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय, पिपरी में बीएएमएस की पढ़ाई शुरू होने का रास्ता साफ हो गया है। पाठ्यक्रम की 100 सीटों को मान्यता मिलने के बाद अब विश्वविद्यालय प्रशासन को नीट की चौथी काउंसिलिंग का इंतजार है। काउंसिलिंग पूरी होते ही दाखिले की प्रक्रिया शुरू कर दी जाएगी। उम्मीद है कि दिसंबर के अंतिम सप्ताह तक कक्षाएं भी संचालित होने लगेंगी। विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार अजीत जायसवाल ने बताया कि अगले 10 से 15 दिनों में काउंसिलिंग की प्रक्रिया पूरी होने की संभावना है। विश्वविद्यालय को 20 नवंबर को बीएएमएस की 100 सीटों के लिए मान्यता मिली है।

इससे पहले नीट की पहली, दूसरी और तीसरी काउंसिलिंग पूरी हो चुकी थी। मान्यता मिलने में देरी के कारण कई अभ्यर्थियों ने दूसरे निजी कॉलेजों में दाखिला ले लिया। विश्वविद्यालय प्रशासन का मानना है कि यदि समय से मान्यता मिल जाती तो बड़ी संख्या में अभ्यर्थी यहां प्रवेश ले सकते थे।

बीएएमएस के प्रथम वर्ष में आयुर्वेद संहिता सिद्धांत, शरीर क्रिया और रचना शरीर की पढ़ाई होगी। तीनों विषयों के लिए अलग–अलग शिक्षकों की नियुक्ति की गई है।

विश्वविद्यालय प्रशासन के अनुसार, मान्यता मिलने से पहले ही शिक्षकों की नियुक्ति सहित सभी शैक्षणिक तैयारियां पूरी कर ली गई थीं। 100 विद्यार्थियों को एक साथ पढ़ाने के लिए बड़े हॉल की व्यवस्था भी की गई है। दूसरे और तीसरे सेमेस्टर में पाठ्यक्रम के अनुसार अन्य विषयों की पढ़ाई कराई जाएगी। प्रवेश और परीक्षा शुल्क शासन की ओर से निर्धारित किया जाएगा। विश्वविद्यालय को बीएएमएस की मान्यता मिलने से पहले पीजी पाठ्यक्रम की 20 सीटों की स्वीकृति मिली थी। हालांकि, बीएएमएस की मान्यता के लिए निरीक्षण करने पहुंची दिल्ली की नेशनल कमीशन फॉर इंडियन सिस्टम ऑफ मेडिसिन (एनसीआईएसएम) की टीम ने निरीक्षण के बाद पीजी की सीटें घटाकर पांच कर दी थीं। इसके चलते पिछले सत्र में विश्वविद्यालय में पीजी की केवल पांच सीटों पर ही प्रवेश हो सका। विश्वविद्यालय में छह महीने का पंचकर्म डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी संचालित किया जा रहा है। इसमें विद्यार्थियों को पंचकर्म चिकित्सा पद्धति और उपचार में इस्तेमाल होने वाली विभिन्न विधियों एवं उपकरणों का प्रशिक्षण दिया जाता है। रजिस्ट्रार अजीत जायसवाल ने बताया कि नीट की चौथी काउंसिलिंग पूरी होते ही बीएएमएस में प्रवेश प्रक्रिया शुरू कर दी जाएगी। इसके बाद कक्षाओं का संचालन भी शुरू करा दिया जाएगा।

सपा कार्यकर्ताओं ने मुलायम सिंह यादव को श्रद्धांजलि दी



संवाददाता–सिद्धार्थनगर। इटवा में रविवार को समाजवादी पार्टी कार्यालय में पार्टी संस्थापक और उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव की जयंती मनाई गई। कार्यकर्ताओं ने उनके चित्र पर फूल चढ़ाकर श्रद्धांजलि दी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता विधानसभा अध्यक्ष बबलू खान ने की और संचालन अब्दुल लतीफ ने किया। प्रदेश सचिव अजय चौधरी ने कहा कि मुलायम सिंह यादव ने पिछड़ों, गरीबों, अल्पसंख्यकों और महिलाओं की आवाज सड़क से लेकर सदन तक उठाई। उन्होंने कहा कि उनके संघर्ष के बाद समाजवादी पार्टी की चार बार सरकार बनी।

जिला महासचिव कमरुज्जमा खान ने कहा कि मुलायम सिंह यादव के संघर्षों के बारे में किसी से कुछ छिपा नहीं है और विरोधी भी उनका सम्मान करते थे। उन्होंने कहा कि मुलायम सिंह यादव किसानों की सशक्त आवाज थे।

कार्यक्रम में सुरेश पाण्डेय, पप्पू पाण्डेय, देवेंद्र प्रताप सिंह, मोहम्मद हारून, एजाज शाह, राकेश पाण्डेय, सरोज राइनी, इमरान अहमद, महेन्द्रपाल यादव, विशाल मिश्रा और दिलीप राइनी मौजूद रहे।

शिक्षक संघ के तीन ब्लॉकों में पदाधिकारी निर्विरोध चुने गए

संवाददाता–संतकबीरनगर। उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ की जिला इकाई के ब्लॉक स्तरीय चुनाव के लिए रविवार दोपहर 12 बजे नामांकन हुआ। जिले के नौ ब्लॉकों में चुनाव कराया जा रहा है।

साथा ब्लॉक में प्रमोद पाठक अध्यक्ष, अब्दुर्रशीद मंत्री और मुजीबुर्रहमान कोषाध्यक्ष पद पर निर्विरोध चुने गए। सेमरियावां ब्लॉक में मो. शोएब अख्तर मंत्री और बघौली ब्लॉक में रमेश कुमार मंत्री पद पर निर्विरोध चुने गए। प्रदेश अध्यक्ष डॉ. दिनेश चंद्र शर्मा और प्रदेश महामंत्री संजय सिंह की ओर से चुनाव कार्यक्रम जारी किया गया है। चुनाव प्रक्रिया निष्पक्ष और व्यवस्थित ढंग से कराने के लिए प्रांतीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष राधेरमण त्रिपाठी को जिला निर्वाचन अधिकारी बनाया गया है।

रविवार, 22 नवंबर को जिला मुख्यालय पर नामांकन प्रक्रिया पूरी हुई। नियमों के मुताबिक, प्रत्याशियों ने संबंधित ब्लॉक की साधारण सभा और मतदाता सूची के पांच सदस्यों को प्रस्तावक बनाया। उनसे अलग पांच सदस्यों को समर्थक बनाकर नामांकन पत्र जमा किए।

प्रत्याशियों ने निर्वाचन अधिकारी के सामने प्रस्तावकों और समर्थकों के हस्ताक्षरों की पुष्टि कराई। हर नामांकन पत्र के साथ दो हजार रुपये शुल्क जमा किया गया।



प्रत्याशियों और मतदाताओं के लिए पहचान पत्र दिखाना जरूरी था।

चुनाव कार्यक्रम के मुताबिक, बाकी ब्लॉकों में 29 नवंबर को मतदान होगा। इसी दिन मतगणना के बाद नतीजे घोषित किए जाएंगे।

NOTICE

This is to inform the general public that my correct name is Mahendra Pal Singh, son of Bam Bahadur Singh, as recorded in all government records. However, due to a clerical error, my name has been incorrectly mentioned as Mahendra Pratap Singh on my Aadhaar Card bearing number 645676400518.

The name Mahendra Pratap Singh is incorrect. Henceforth, I should be known and identified by my correct name, Mahendra Pal Singh.

Mahendra Pal Singh
Son of- Bam Bahadur Singh
Village & Post – Kanaula Khas
Police Station – Kalwari
District – Basti, Uttar Pradesh

दैनिक
भारतीय बस्ती
संस्थापक सम्पादक स्व. दिनेश चन्द्र पाण्डेय
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1–4 A लोहिया कम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

प्रबन्ध सम्पादक–**दिनेश सिंह**
संयुक्त सम्पादक–**प्रदीप चन्द्र पाण्डेय**
अयोध्या–फैजाबाद कार्यालय–
चतुर्मुखी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट
अयोध्या–फैजाबाद
लखनऊ कार्यालय–
आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच, कानपुर रोड लखनऊ।
गोरखपुर कार्यालय–
इलाहीबाग गोरखपुर।
मो0 9336715406, 8400925463
ई.मेल **bhartiyabasti@gmail.com**
dainikbhartiyabasti@gmail.com